कौन बनेगा पास विथ ऑनर

Hindi questionary for BK students

Book written by: BK Ramashankar

Published by: Shiv Baba Services Initiative

Main Website: www.shivbabas.org | **BK Google**: www.bkgoogle.org

Get free PDF books: shivbabas.org/books

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग -"1" (खण्ड -1)

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं-1- सकाश देने की सेवा करने के लिए .....बन बेहद के वैरागी बनो ?

A -लगावमुक्त

B- मोहमुक्त

C- न्यारे

प्रश्न सं- 2- संकल्प रूपी बीज को सदा

समर्थ बनाने वाले .....भव ?

A- योगी तू आत्मा

B- ज्ञानी तू आत्मा

C- दोनों उत्तर सही

प्रश्न सं 3- इनमें कौनसा सही नहीं?

A. जितना निराकारी स्थिति में रहेंगे

उतना ही निरंहकारी और निर्विकारी

भी रहेंगे।

B. विकार की कोई बदबू नहीं रहेगी।

यह है मुख्य बात।

C. तीन बातें निराकारी,निर्विकारी और निरहंकारी रखने से

त्रिकालदर्शी बन जायेंगे।

D. भविष्य में फिर विश्व के मालिक।

प्रश्न सं 4- ब्रह्मा बाप ब्रह्मा बना ही तब

जब बाप-दादा क्या हुए?

A- कम्बाइन्ड

B- कम्पेनियन

C- साथी

D- B और C

प्रश्न सं 5-सलामत किसे कहेंगे?

A - जो अपनी तकदीर की महिमा

गाते रहते हैं।

B- जो उठते-बैठते बाप की याद में

रहते हैं।

C- जो यह समझते हैं हम भविष्य में विश्व के मालिक बनेंगे,शिव बाबा नहीं वह तो विश्व के रचता हैं।

D- A, B और C सही

E- A और B सही

प्रश्न सं 6- किसने ही तुमको कब्रदाखिल

कर दिया है, इसको प्वाइज़न/विष कहा

जाता है?

A विकर्म

B विकार

C रावण

प्रश्न सं 7-- श्रेष्ठ कर्म का सहज सिम्बल/प्रतीक कौन है ?

A अव्यक्त ब्रह्मा

B मम्मा

C-ब्रह्मा बाप

D- B & C

प्रश्न सं 8- ..... पर बैठ कर्म करते हो तो वो कर्म भी कितने श्रेष्ठ होते हैं। क्योंकि सर्व कर्मेन्द्रियां लॉ और ऑर्डर पर रहती हैं ?

A- अकाल तख्त

B- दिलतख्त

C- राज्यतख्त

D- A और B

E- A और C

खण्ड-1 प्रश्नोत्तरी के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1-A लगावमुक्त

वास्तव में सकाश सेवा के लिए जितनी श्रेष्ठ पुरूषार्थी स्थिति हो उतना अच्छा है।

हालांकि तीनों उत्तर क्रमवार (नम्बरवार) सही हैं।पर सबसे उपयुक्त जवाब का चयन करने के लिए कहा गया है।बाबा ने अनेक मुरलियों में सकाश सेवा के लिए लगावमुक्त की चर्चा की है।

लगाव आसक्ति का पर्यायवाची शब्द है।बाबा के साथ अन्य जगह भी पढा है कि *आसक्ति दुखों का मूल है*।रही मोह की बात विकारों मे 5 वे क्रम पर आता है, हम जब पवित्र जीवन जीने लगते हैं तो क्रोध आदि शनै शनै कमतर होते रहते हैं।

उत्तर सं 2- B- ज्ञानी तू आत्मा

वरदान आधारित प्रश्न है। श्रेष्ठ पुरूषार्थी तो A & B दोनों होता है। पर सवाल पर गौर करें तो यहां संकल्प रूपी बीज को समर्थ होने अर्थात ज्ञानी सम्बन्धित बात की गई है। संकल्प रूपी बीज का सम्बन्ध योगी से नहीं हो सकता।हमारे मन में पहले विचार- संकल्प-वाणी- कर्म की श्रृंखला चलती है।

उत्तर सं 3 -C - विकल्प B को छोड़कर सभी वाक्यांश बाबा के महावाक्य हैं।विकार की बदबू रहेगी। मुरली में पढा है इन्द्र परी की कहानी जिसका सन्दर्भ काम विकारियों को बाबा मिलन मे न लाने से है।

उत्तर सं 4- A-कम्बाइंड

इस प्रश्न का उत्तर कम्बाइंड अधिकतर ब्रह्मावत्सों ने दिया है।सही है कि शिव बाबा को इन स्थूल नेत्रों के द्वारा न देख सकते और न सुन सकते हैं। बाप को समुख ज्ञान सुनने के लिए ब्रह्मा तन का

सहारा लेना होता है। जब बाप दादा कम्बाइंड होते तभी ब्रह्मा द्वारा ज्ञान सुना सकें।

2 & 3 विकल्प क्रमशः कम्पेनियन और साथी के सन्दर्भ में मुरली में कई बार आया है कि हमें बाबा के अतिरिक्त जो अपने सम्बन्धी दिव्य भाई बहन होते हैं, उनमें 1-2 को पुरूषार्थ में उन्नति के लिए कम्पेनियन या साथी बनाना चाहिए।

उत्तर सं 5 - D

यहां विशेष स्मरण करा दें बाबा से योग लगाना दो तरह का है। 1-एकान्त एकनिष्ठ होकर बाबा से योग लगाना ।2-उठते बैठते या कर्म करते हुए,दूसरी श्रेणी के योग को चार्ट में गणना नहीं करते। पर इसका मतलब यह भी नहीं की इस याद का महत्व कम है।

पर केवल बाबा की याद ही हम ब्रह्मावत्सों को 16 कला सम्पन्न /सलामत नहीं रहने देगी।उत्तर तभी सही हो सकता था जब शुरू के 3 विकल्प होते हैं।सदा सलामत/ कुशलतापूर्वक/ सुरक्षित न सिर्फ उठते बैठते बाबा को याद करना अपितु स्वयं की महिमा अर्थात्,विविध स्वमानों का अभ्यास,विश्व के मालिक,जो

पाना था सो पा लिया आदि आदि विविध महावाक्यों से स्वयं को गौरवान्वित महसूस कराना भी स्वयं को सलामत रखने में आयेगा। D उत्तर के आधार पर है।

उत्तर सं 6- B - विकार

कब्रदाखिल अर्थात् अकाले अवसान/मृत्यु हमें रावण और विकारों दोनों ने बनाया ।पर बाबा ने मुरलियों में कब्रदाखिल बनाने का विष 5 विकारों को ही बताया है।सबमें 5 विष एक समान नहीं अपितु अति-न्यून भी होते।

विकर्म तो इन विकारों के कारण होते हैं जिन्हें रावण राज्य में जन्मजन्मान्तर भुगतते हैं।

उत्तर 7 - C ब्रह्मा बाप

अव्यक्त मुरली से -ब्रह्मा बाप मुरली से-श्रेष्ठ कर्म का सहज सिम्बल ब्रह्मा बाप है इसलिये आप सभी विशेष पुरुषार्थ का शब्द यही वर्णन करते हो कि बाप समान बनना है। हम सभी को ब्रह्मा बाप समान संपूर्ण स्थिति को प्राप्त करना हैं । हमारा अगर उनसे सच्चा प्यार हैं तो हमे उन्हे फ़ॉलो करना।अनेक मुरलियों में इस

तरह से बाबा ने ब्रह्म बाबा को सिम्बल बनने को कहा। एक मुरली अनुसार- पुरुषार्थ करना चाहिए कि मम्मा बाबा को फालो करें, बहुत मीठा बनें। फालो और प्रतीक में अन्तर है।ब्रह्मा बाप सम्पूर्ण कर्मातीत हुये, इसलिए बाबा ने ब्रह्मा को प्रतीक कहा।मम्मा कर्मातीत अवस्था न पाकर एडवांस पार्टी को प्राप्त हुई।फालो तो हम महारथियों का भी करते।अव्यक्त ब्रह्मा दृश्यमान न होने के कारण फालो/ प्रतीक नहीं कर सकते।

उत्तर सं 8- A- अकाल तख्त

एक मुरली अनुसार जो सदा अकालतख्त पर बैठ कर कर्म करते हैं, उनके कर्म श्रेष्ठ होते हैं क्योंकि सभी कर्मेन्द्रियां लॉ और ऑर्डर पर रहती है । दूसरी मुरली में मैं अकाल तख्त और दिलतख्त पर बैठ सदा श्रेष्ठ कर्म करने वाली कर्मयोगी आत्मा हूँ। अकालतख्त पर ..... कर्मेन्द्रियां लॉ और ऑर्डर पर रहती है । दूसरी मुरली वरदान है।जहां प्रश्नानुसार कर्मेन्द्रियां लॉ और ऑर्डर वाक्यांश नही है।राज्यतख्त तो सुखधाम के सन्दर्भ में है।

खण्ड -2

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न न. 1- परमपिता परमात्मा पतित सृष्टि को पावन करते हैं अथवा कौड़ी जैसे कंगाल भारत को क्या बनाते ?

A- सोने की चिड़िया

B- हीरे जैसा सिरताज

C- स्वर्ग

D- B और C

E- A,B और C

प्रश्न सं 2- बच्चों की बुद्धि कितने प्रकार की होती है ?

A- त्रिकालदर्शी बुद्धि

B- कभी एककालदर्शी

C- अलबेली बुद्धि

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 3- कौनसी आत्मा को पास्ट और

फ्युचर भी इतना ही स्पष्ट होता है

जैसे प्रेजेन्ट स्पष्ट है?

A- त्रिनेत्री वाली

B- त्रिकालदर्शी स्थिति

C- दिव्य बुद्धि वाली

D- उपरोक्त सभी सही हैं।

प्रश्न 4- -जो एक दो को सुख देते हैं।

उनको कहा जाता है कौनसा

सम्प्रदाय ?

A- ब्राह्मण सम्प्रदाय

B- क्षत्रिय सम्प्रदाय

C- देवता सम्प्रदाय

D- B और C

प्रश्न सं 5 - सर्व सम्बन्धों का रस वा

अनुभूतियां करना ही क्या है?

A- अनुभवीमूर्त

B- मध्याजीभव

C- मनमनाभव

D- B और C

प्रश्न सं 6- देहभान छोड़ने की मेहनत नहीं

करो लेकिन किसमें स्थित रहने का

अटेन्शन रखो?

A- देही-अभिमानी

B- स्वमान

C- विदेही स्थिति

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 7 -मुझ अपने पारलौकिक

परमप्रिय परमपिता परमात्मा को

नहीं जानते हैं उनको क्या कहा जाता है ?

A- शास्त्रवादी

B- आस्तिक

C- नास्तिक

D -A और C

प्रश्न सं 8--- कौनसी शक्ति के आधार से

ज्ञान खजाने को अपना बना लो तो

विध्न विदाई ले लेंगे?

A मनन शक्ति

B चिंतन शक्ति

C एकाग्रता की शक्ति

D उपरोक्त सभी

खण्ड -2 प्रश्नोत्तरी के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर 1- B - हीरे जैसा सिरताज

अनेक मुरलियों मे यह महावाक्य है-बाबा कौड़ी जैसे कंगाल भारत को हीरे जैसा सिरताज (रत्नों में हीरे को सर्वश्रेष्ठ) बनाते हैं। बाबा ने दूसरी मुरलियों में कौड़ी जैसे कंगाल के समतुल्य शब्द पतित दुनिया/ रावण राज्य को सोने की चिड़िया और स्वर्ग बनाने की बात की हे। उत्तर ABC हीरे जैसा सिरताज,सोने की चिड़िया ,स्वर्ग तीनों विकल्प पर्यायवाची (मिलते-जुलते अर्थ)है।

इस विचार सागर मंथन से D विकल्प सही हो रहा। स्वर्ग और सोने की चिड़िया के सन्दर्भ मे कौड़ी से कंगाल का उल्लेख मुरली मे नही।पर अनेक मुरलियों कौड़ी जैसे..... हीरे जैसा सिरताज होने के कारण बाबा के महावाक्य सिरमौर होने के कारण विकल्प D सही है।

उत्तर सं 2- D उपरोक्त सभी

हम ब्राह्मण का पुरूषार्थ क्रमवार/नम्बरवार है।शिव बाबा ने हम बच्चों को तीनों कालों भूत, भविष्य, वर्तमान बनाकर त्रिकालदर्शी बना तो दिया है,पर ब्रह्मावत्सों में कुछ एक कालदर्शी कुछ अलबेले बनकर सब त्रिकालदर्शी नहीं रह पाते है। मुरली अनुसार-बच्चों में तीन प्रकार की बुद्धि वाले एक त्रिकालदर्शी दूसरे... एक कालदर्शी। *तीसरा नम्बर*.... अलबेली.....

उत्तर सं.3- C दिव्य बुद्धि वाली

बाबा ब्रह्मा तन में अवतरित होकर ब्राह्मण धर्म के बल से अपने में खोये हुए बेहोश बच्चों को दिव्य बुद्धि देकर अपना बनाते हैं...

ईश्वरीय जन्म की गोल्डन गिफ्ट दिव्य बुद्धि देता है, दिव्य बुद्धि मिली तभी त्रिनेत्री व त्रिकालदर्शी बन पाए

उत्तर सं 4- C देवता सम्प्रदाय

ब्राह्मण अभी पुरूषार्थी हैं, विकर्मो को चुक्तु कर रहे तो एक दो को सुख और विकारों के वशीभूत होकर एक दूसरे को दुख भी देते हैं। स्पार्क विंग की पुस्तक में बाबा का अव्यक्त मुरली के महावाक्य का उद्धरण है कि त्रेतायुग में लोगों में कुछ खिटपिट शुरू हो जाती है। इसलिये सतयुगी दुनिया के देवता एक दूसरे को सुख देते है।यह साकार मुरली मे भी यही उत्तर है।

उत्तर सं 5- C मनमनाभव ।

सर्व सम्बन्ध का तात्पर्य शिवबबा से पिता, माता प्रेमी,पुत्र आदि सम्बन्धों (सर्वश्रेष्ठ सम्बन्ध पिता) से है।जिसकी अनुभूति महसूसता/FEELING तभी कर पायेंगे जब मनमनाभव अर्थात् स्वयं को आत्मा समझकर एक बाप को भिन्न भिन्न सम्बन्धों से याद करेंगें- (मुरली शब्दकोश के अनुसार यह अर्थ) तो ब्राह्मण जीवन में अनुभवीमूर्त/ स्वरूप बन श्रेष्ठ पद के अधिकारी बनेंगे

मध्याजीभव अर्थात् ब्रहमा और शंकर के मध्य विष्णु पद स्वर्ग में बनने से है। अनुभवीमूर्त विकल्प पूरी तरह मनन योग्य नहीं है।

उत्तर सं 6-B स्वमान।

देहभान को छोड़ने के लिए बाबा मुरलियों में दुहराते रहते है बच्चे देही/आत्माभिमानी ,विदेही बनो कहते है,पर बच्चे घड़ी घड़ी भूल जाते है। ब्रह्मावत्सों के लिए यह स्थिति कड़ी चुनौतीपूर्ण होती है। पर स्वमान का अभ्यास हमें देहभान छोड़ने मे सहज बनाता है।हर स्वमान में आत्मा शब्द जुड़ा है।जो हमें देहभान से मुक्त करता है। योग,बाबा की याद भी देहभान से मुक्त करती है। उसमे भी हम घड़ी घड़ी भूल जाते है।

उत्तर 7- C नास्तिक

अर्थात् ईश्वर को न मानने वाले । शास्त्रवादी या ऋषि मुनि भी ईश्वर के सम्बन्ध में नेति,नेति कह कर कहते हैं हम परमात्मा के विषय में नहीं जानते। उसी तरह भक्त भी अज्ञानतावश ईश्वर को न समझ अंधश्रद्धा से न सत्य जानकारी जानते हुए भी भक्ति करते रहते है वे ईश्वर के सच्चे स्वरूप को नहीं जानते,परन्तु ईश्वर

के विषय और सत्य जानकारी न होते हुए भी पारलौकिक पिता को भिन भिन्न रूपों जानते मानते हैं।सत्य परिचय

जब बाबा स्वयं आकर परिचय देते है तभी पूर्ण रूप से जानना सम्भव है।

शास्त्रवादी सत्य स्वरूप न समझने के कारण ईश्वर को ब्रह्म मानकर ब्रह्मलोक मे ध्यान लगाते थे। जो उसका निवास स्थान है।तुलसी के भगवान दशरथनन्दन राम थे,पर कबीर के राम (साखियो में राम नाम लिया है) निर्गुण निराकार थे।पर बाबा कहते है मै ज्योति स्वरूप हू मेरा आकार है। शास्त्रवादियो ने दिव्य बुद्धि से श्रीकृष्ण आधारित गीता और रामायण आदि लिखी जिसमे परमात्मा सम्बन्धित सच्चाई तो है. यहां एक विशेष जानकारी कि श्रीमद् भागवत पुराण में श्रीकृष्ण और गोपियों का उल्लेख तो है पर राधा का नही।

राधा का सर्वप्रथम उल्लेख सर्वप्रथम संस्कृत के विद्वान जयदेव ने 7 वी शताब्दी में गीत गोविंद के रचयिता जयदेव ने किया। उसी के आसपास न सिर्फ कलयुग बल्कि अव्यविभिचारी भक्ति देवी देवताओं की शुरू हुई। हिंदी में 12 वी शताब्दी मे बिहार मैथिली के कवि ने राधा कृष्ण को आधार बनाकर कविताएं की भक्ति

भाव से पर बाद के कवियों ने राधा कृष्ण पर श्रृंगारिक कविता कर बहुत ग्लानि की।

उत्तर सं -8- A - मनन शक्ति

सर्व खजानों ज्ञान,गुण, शक्ति का विशेष आधार है ... मनन शक्ति और उसका आधार भी संकल्प शक्ति है। महावाक्य अनुसार ... मुरली से स्वमान की सीट पर रहने के लिए मनन चिंतन ... ज्ञान, गुण और शक्तियों रूपी खजाने ... अतः उत्तर A सही। बाबा ने कहा चिंतन को समाप्त कर ज्ञानरत्नो से स्वयं को भरपूर कर शुभचिंतन का खजाना अपने अंदर भरने का पुरुषार्थ करना। है.यह विकल्प पूरी तरह गलत है। एकाग्रता की शक्ति स्वमान,योग फरिश्ता स्थिति में अहम भूमिका निभाती है,ज्ञान मे मनन/विचार सागर मंथन होने से विचार चलने से पूर्ण एकाग्रता की स्थिति नहीं रह जाती। महावाक्य अनुसार एकाग्रता की शक्ति हर आत्मा के सम्बन्ध में स्नेह, सम्मान, स्वमान के ...। और “मन को एकाग्र कर, एकाग्रता की शक्ति द्वारा फरिश्ता स्थिति का अनुभव करो”

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (2) खण्ड - (3)

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- ऑखों से भल ..... देखते हो परन्तु याद सुप्रीम टीचर शिवबाबा को करना है ?

A ब्रह्मा को

B बापदादा को

Cअव्यक्त ब्रह्मा को

D A और C

प्रश्न सं 2- जो बाप के प्रिय, ब्राह्मण

परिवार के प्रिय और विश्व सेवा केप्रिय हैं वही क्या हैं?

A एकनामी

B एवरप्योर

C एवररेडी

D A और C

प्रश्न 3-- तुम बच्चे कलियुगी गोवर्धन पर्वत को

उठाने के लिए कौन-सी अंगुली देते हो ?

A- श्रीमत पर चलने की

B- सहयोग की

C- पवित्रता की

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 4 -- बच्चों की डबल पूजा किस रूप में होती है ?

A- सालिग्राम के रूप में

B- देव आत्माओं के रूप में

C- भगवान भगवती

D- A और B

E- A ,B और C

प्रश्न 5 - चेहरे वा चलन से प्योरिटी की झलक तब दिखाई देगी जब सदा संकल्प में भी क्या हो ?

A - रायल्टी

B - प्योरिटी

C- एकवर्ता

D -A और B

प्रश्न सं 6 -परमात्मा के सम्बन्ध में इनमें सबसे उपयुक्त कथन का चयन करें?

A-अन्तर्यामी

B-सर्वज्ञ

C-विश्व का मालिक

D-B और C

प्रश्न सं 7- अब भारत-वासियों पर राहू की दशा बदलकर किसकी दशा बैठती है?

A- सूर्यवंशी व चन्द्रवंशी की दशा

B- शुक्र की दशा

C- मंगल की दशा

D- उपरोक्त में से कोई नहीं।

प्रश्न सं 8-मात-पिता की आशीर्वाद आगे बढ़ाती है इसलिए आज्ञाकारी बन क्या लेनी है?

A- दुआए

B- आशीर्वाद

C- वरदान

D- A और B

खण्ड -3 प्रश्नोत्तरी

के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं-1 A-ब्रह्मा को

यह बहुत विरोधाभासी प्रश्न है।ब्रह्मावत्स संदेह भी करते हैं कि शिवबाबा को याद करूं या दोनों को। यहा इस प्रश्न का निवारण श्रीमतानुसार किया गया है - बाबा ने साकार की अनेक मुरलियों में ब्रह्मा बाप को देखते हुए भी उन्हें याद न कर एक बाप को याद करने की बात कही है। यह भी कहा है कि ब्रह्मा को याद करने से तुम्हारे विकर्म नहीं कटेंगे।उस समय ब्रह्मा बाप भी पुरूषार्थी थे, सम्पूर्णता और कर्मातीत न होने से बापसमान स्थिति को प्राप्त नहीं हुए थे। ब्रह्मा बाबा उस समय ब्रह्मावत्सों को अपना चित्र भी न रखने की बात करते थे- दादी जानकी वचन-। पूर्व की क्विज में कम्बाइंड शब्द आया है और अब अव्यक्त ब्रह्म जब शिवबाबा का कम्बाइंड बनकर ब्रह्मावत्सों की सेवा कर रहे। महावाक्य अनुसार 1- भले साकार रूप में नहीं देखा लेकिन अब अव्यक्त रूप में पालना ... ब्रह्मा बाप की विशेष है।

2-अब भी दोनों ही मिलके बापदादा दोनों ही बच्चो की सेवा कर रहे हैं। तो ब्रह्मा बाप की पालना का विशेष पार्ट है, फालो बापदादा दोनों को करो क्योंकि सभी दिल से याद करते हैं ब्रह्मा बाप की विशेष शिक्षा है – स्मृति स्वरूप बापदादा के बनो। अकेले बाप भी नहीं, अकेले ब्रह्मा बाप भी नहीं। दोनों को याद करो। अन्य विकल्प बापदादा और अव्यक्त ब्रह्मा भी युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होता है। यह प्रश्न साकार मुरली आधारित होने के कारण विकल्प A सही।

उत्तर 2- D एवरप्योर

ब्राह्मण जीवन का फाउंडेशन/ आधार है। पवित्रता प्रथम स्तम्भ है। बिना पवित्रता के ब्राह्मण जीवन का आधार नही। ब्रह्माकुमारीज की प्रथम शर्त है। बाप , ब्राह्मण,विश्व सेवा के प्रिय यह प्रश्न अव्यक्त मुरली सम्बन्धित है। पवित्रता के कारण इन सब के प्रिय नहीं होगें। महावाक्य अनुसार ----

१-एवररेडी। बाप पसन्द, ब्राह्मण परिवार पसन्द और विश्व की सेवा के पसन्द। यह तीनों ...

२- जो एकनामी रहते और एकॉनामी से चलते हैं, वही प्रभू प्रिय हैं ... वही बाप वा परिवार के प्यार के ...

उत्तर 3- C पवित्रता

महावाक्यों से तुम बच्चे कलियुगी गोवर्धन पर्वत को उठाने के लिए कौन-सी अंगुली देते हो?

उत्तर:-पवित्रता की। पवित्रता की प्रतिज्ञा करना ही जैसे अंगुली देना है। पवित्रता नहीं है तो भारत का हाल देखो क्या हो चुका है। अन्य कई मुरलियों में यथा भी तुम रूप बसन्त हो,* *तुम्हें ... गोवर्धन पर्वत को उठाने के लिए पवित्रता ...।श्रीमत के अन्तर्गत सबसे पहले पवित्रता ही आती है।यहां सबसे उपयुक्त विकल्प का चयन करना था जो कि महावाक्यों मे पवित्रता ही वर्णित है, अंगुली देना मुहावरा है जिसका अर्थ सहयोगी और सहारा देने से है।-

---

उत्तर-4 D - अव्यक्त महावाक्यानुसार कभी भी सालिग्राम को देखते हो तो क्या अनुभव

करते हो? ये हम ही हैं ऐसे लगता है? तो बाप ने बच्चों को समान तो क्या लेकिन अपने से भी श्रेष्ठ पूज्य बनाया है। बच्चों की पूजा डबल रूप में होती है। बाप की पूज़ा एक ही शिवलिंग के रूप में होती है। आप बच्चों की सालिग्राम के रूप में भी होती है और देव आत्माओं के रूप में भी पूजा के अधिकारी होती है। बाप से भी

ज्यादा डबल रूप की आत्मायें आप हो। यह सही है कि मुरलियों में बाबा ने हमें भगवान भगवती का टाइटिल/पद दिया है सम्मान में।पर भक्त और अन्य धर्म वाले शिवबाबा/ईश्वर को इस रूप मे मानते व पूजते है। ।

उत्तर -5- D रायल्टी और प्योरिटी ।

रॉयल आत्मा का चेहरा और चलन ... तो प्योरिटी की रॉयल्टी सदा प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे।पूज्य रूप में भी आप देव आत्माओं की कितनी रॉयल्टी से पूजा होती रहती है क्योंकि आप आत्माओं की प्योरिटी की ही रॉयल्टी है। ऐसे सम्पूर्ण पवित्र और कोई भी आत्मा सारे कल्प में न ही बनी है, न बनेगी। यह प्योरिटी की ही विशेषता है। इसलिए सिर्फ देव आत्माओं के आगे ही यह महिमा गाते हैं कि आप सम्पूर्ण निर्विकारी हो,एकवर्ता भी ब्राह्मण जीवन की विशेषता व गुण है।पर महावाक्यों और उपयुक्त उत्तर चयन

के आधार पर श्रीमत में भी पहले नम्बर पर पवित्र मार्ग पर चलना है D सही किया जाता है।

उत्तर 6- B सर्वज्ञ

बाबा कहते हैं मैं तुम बच्चों को स्वर्ग का मालिक बनाता हूं। देवता बनकर तुम विश्व के मालिक बनते हो । मैं नये विश्व का रचयिता हूँ।दूसरे पिता परमात्मा शिव बाबा सर्व शक्तिवान,सर्वज्ञ है वह गीता ज्ञान दाता है गीता का भगवान हैं।मैं सर्वज्ञ,अजन्मा, अभोक्ता अकर्ता, अजर, अमर, अविनाशी हूं ।

बाबा ने कहा कि मैं अंतर्यामी (मन की बात जाननेवाला) नहीं हूँ। बाबा ने स्पष्ट किया, जैसे साकारी दुनिया के अंदर भक्ति मार्ग की आत्माएं समझती हैं कि अंतर्यामी माना जो हमने सोचा अभी भगवान को पता चल गया और हम जो कर रहे हैं, पर मुरली महावाक्यानुसार मनुष्य फिर समझते हैं बाबा अन्तर्यामी है, सबके मन की बात जानकर क्या करूंगा,मैं अन्तर्यामी नहीं हूँ।इस तरह सर्वज्ञ तो है पर अन्तर्यामी नहीं।

उत्तर-7- D- उपरोक्त में से कोई नहीं अर्थात् बृहस्पति की दशा

इनमें से कोई नहीं अर्थात् बृहस्पति की दशा संगमयुगी ब्राह्मण बच्चो की है। बाकी भारत सहित सारी दुनिया पर राहू की दशा है। इस रावण राज्य में जीवन नर्क के समान बन गया है। बुध और मंगल की दशा होने पर ज्योतिष अनुसार जातक को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों परिणाम होते हैं। ज्योतिष में, नवग्रह नौ दशाओं पर शासन करते हैं। इसलिए सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी कोई दशा नहीं। बृहस्पति की दशा-भक्ति में, व्यक्ति आदरसूचक धार्मिक अध्ययनों और शिक्षा में संबद्ध रहकर ईश्वर की कृपा से अपनी सभी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करना चाहता है और सुकर्मों में संलग्न रहता है। मुरलियों में बृहस्पति की दशा की चर्चा हुई है। *_बाबा ने कहा भी है की बच्चे तुम अभी संगम पर हो तुम्हारे उपर बृहस्पति की दशा बैठी है। यथा - अभी तुम्हारी ज्योति जगी हुई है, ज्योति जगना अर्थात् बृहस्पति की दशा बैठना, बृहस्पति की दशा बैठने से तुम विश्व के मालिक बन जाते ...._*

उत्तर 8- D आशीर्वाद और दुआ।

आशीर्वाद का हिंदी पर्यायवाची शब्द – शुभकामना, आशीष, शुभ वचन, आर्शीवचन, दुआ। अंग्रेजी शब्द BLESSINGS

आशीर्वाद और दुआ के लिए ही प्रयुक्त होता है।इस शब्द को बाबा अनेक महावक्यों में उच्चारित करते रहते हैं।यहां प्रश्न में माता-पिता का आशीर्वाद लेकर हमें आगे बढ़ाता है तो हमें आज्ञाकारी बनकर ब्लेसिंग/आशीर्वाद/दुआ लेनी है। प्रश्न की शैली के अनुसार यह उत्तर सही है। वरदान बाबा दाता बनकर हमें सहज ही देता हैं,उसके लिए आज्ञाकारी बनने की शर्त नही।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (2) खण्ड -(4)

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न 1-देवी- देवता और दिव्य गुणों वाले मनुष्य होते हैं ?

A- सतयुग

B- त्रेतायुग

C- सुखधाम

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 2- यदि श्रीमत का हाथ सदा साथ है, तो.....

A- माला का दाना अवश्य बनेगे।

B- सारा ही युग हाथ में हाथ देकर चलते रहेंगें

C- सदा निश्चिंत रह नाचते-कूदते .चलते रहेंगे।

D- B और C

E- A, B और C

प्रश्न सं 3- सोलह कलाओं से सम्पन्न कहा जाता है-

A- देवी-देवताओं को

B- श्रीकृष्ण को

C- ब्रह्मा बाबा

D- A और B

E- A,B और C

प्रश्न सं 4- जो यज्ञ स्नेही हैं वह मन्सा-वाचा-कर्मणा, तन मन और धन तीनों सेवा में क्या बनते हैं?

A- सदा सहयोगी

B- सदा योगी

C- सदा सेवाधारी

D-इनमें से कोई नहीं

प्रश्न सं 5- कर्म,समय,श्वांस,बोल सब में व्यर्थ की अविद्या अर्थात् ?

A- इनोसेंट

B- सेन्ट

C- सिद्धि स्वरुप

D-उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 6- अनेकों साल ज्ञान मार्ग में चलने वाली एक माता को शिकायत रहती हैं, घर वाले बदलते नहीं। तो श्रीमत् अनुसार

माताजी को क्या करना चाहिए।

A- बिना स्व-परिवर्तन के कोई भी आत्मा प्रति कितनी भी मेहनत करो, परिवर्तन नहीं हो सकता इसलिए स्व।-परिवर्तन करना होगा।

B-लोग जीवन में परिवर्तन और समझाने दोनों से बदल जाते हैं। तो करके दिखाओ औरम समझाकर दिखाना चाहिए ।

C-घर वालों को रोज मुरली सुनानी चाहिए।

D- A, B और C

E- A और B

प्रश्न सं 7- किसका सामना करना समाप्त करो तो सेवा की ऑफर सामने आयेगी?

A विघ्नों को

B देह-अभिमान

C व्यर्थ

D B और C

E A,B और C

प्रश्न सं 8 -सबसे बड़ा खज़ाना कौन सा है, जिससे ही ज्ञान और योग की परख होती है ?

A स्नेह का खज़ाना

B खुशी का खज़ाना

C ज्ञान का खज़ाना

D शक्ति का खजाना

खण्ड -4 प्रश्नोत्तरी के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं -1 - A, देवी देवता।

यहां इस प्रश्न में दो शर्ते देवी देवता और दिव्य गुण में सबसे उपयुक्त का चयन करना था। दिव्य गुण सतयुग और त्रेतायुग में होते है ,दोनो युग को सुखधाम भी कहते हैं।

7 डे कोर्स (मुरलियों पर आधारित) में सतयुग में देवी देवता और त्रेतायुग में क्षत्रिय पढ़ाया जाता है।पर ज्यादातर मुरलियों में

विरोधाभासी महावाक्य बाबा ने अलग-अलग सन्दर्भ में देवी देवता और क्षत्रिय के सम्बन्ध में उच्चारित किये हैं,जैसे-

पक्ष मे 1--सतयुग में देवता, पीछे त्रेता में क्षत्रिय फिर वैश्य फिर शूद्र फिर ब्राम्हण।यही

2-"हम सो" "सो हम" का वास्तविक अर्थ है। यानी हम ही "सतयुग " में "देवी देवता " थे तो "त्रेतायुग " में "क्षत्रिय" कहलाए।

विपक्ष में- -

1-अविनाशी खण्ड में सतयुग और त्रेतायुग में चैतन्य देवी-देवता राज्य करते हैं,

2-सूर्यवंशी--चन्द्रवंशी देवता बनने वाले हैं वो ही आकर ज्ञान लेंगे, नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार।

3- विरोधाभासी पक्ष -. देवी- देवता और दिव्य गुणों वाले मनुष्य होते हैं सतयुग में या सुखधाम अर्थात स्वर्ग में। त्रेतायुग में क्षत्रिय होते तो उसके लिए हम पुरुषार्थ नहीं करते क्योंकि बाबा ने लक्ष्य लक्ष्मी नारायण का बनने का दिया है।

बाबा ने अनेक महावक्यों में पक्ष से सन्दर्भित त्रेतायुग में क्षत्रिय होते हैं यह महावाक्यों में कहे है।यहां स्पष्ट होता है कि बाबा का पढाने एम आब्जेक्ट या उद्देश्य देवी देवता ही है । वैसे भी 2017 में दोनों रूपों में पार्ट बन्द हो गया।बाबा कहता है कि त्रेतायुग में क्षत्रिय होते तो उसके लिए हम पुरुषार्थ नहीं करते क्योंकि बाबा ने ऐम आब्जेक्ट लक्ष्मी नारायण का बनने का दिया है। बाबा ने मुरलियों में यद्यपि हमें सतयुग और त्रेतायुग अर्थात् सुखधाम में कहीं कहीं देवी देवता पद कह कर अलंकृत करता है। 2 करोड़ देवी-देवता त्रेतायुग युग में आते है। शेष अन्त में संघर्ष करने के कारण क्षत्रिय कहलाते है।बाबा ने अकेले त्रेतायुग को कहीं पर देवी देवता युग नहीं कहा। दिव्य गुण व सुख वहां भी देवी देवता जैसा है। शास्त्रों में श्रीराम को क्षत्रिय ही कहा गया है। अतः 5 वर्ण देवता, क्षत्रिय,वैश्य,शूद्र और ब्राह्मण (अनेक मुरली महावाक्यों में उच्चारित) है ।निष्कर्ष रूप में त्रेतायुग दिव्य गुणों के कारण देवी देवता जैसा होते हुए भी क्षत्रिय वर्ण/ सम्प्रदाय ही है। सतयुग उत्तर सही सिद्ध होता है

उत्तर -2 -B- सारा ही युग हाथ में हाथ देकर चलते रहेंगें।

यदि हम संगमयुग में सदा श्रीमत का सदा साथ देंगे, तभी सारा ही दोनों युग हाथ में हाथ देकर अर्थात् सहयोगी बनकर चलते रहेंगे।

अव्यक्त-बापदादा_"श्रीमत रूपी हाथ सदा हाथ में है तो सारा युग हाथ में हाथ देकर चलते ...।निश्चिंत रह कूदते नाचते रहने वाले परमत वाले भी होते हैं।माला का दाना बनने के लिए श्रीमत पर तो चलना ही है। परन्तु विजय माला में आना है तो विशेष होली (पवित्र)

बनने का पुरुषार्थ करो। जब पक्के संन्यासी अर्थातू निर्विकारी बनेंगे तब विजय माला का दाना बनेंगे। कोई भी कर्मबन्धन का हिसाब-किताब है, तो वारिस नहीं बन सकते, प्रजा में चले।अगर दाने का दाने से सम्पर्क नहीं हो तो माला नहीं बनेंगी इसलिए सन्तुष्टमणी बन सदा सन्तुष्ट रहो और सर्व को सन्तुष्ट करो।

उत्तर -3 - B श्रीकृष्ण।

सतयुग में सर्वगुण सम्पन्न, मर्यादा पुरुषोत्तम, 16 कला संपूर्ण श्रीकृष्ण थे।. सतयुगी राजा का टाइटल 16 कला संपूर्ण सर्वगुण संपन्न संपूर्ण था।परन्तु सतयुग में परमधाम से आने वाली देव

आत्मायें सभी 84 नहीं लेती 84-76 जन्म लेती हैं।और कलायें भी 16 से कमतर होते हुए अन्त तक 14 रह जाती हैं, देवी, देवता उत्तर सही नहीं।ब्रह्मा बाबा तो पुरुषार्थी थे। श्रीकृष्ण ही सतयुग की प्रथम दिव्यात्मा ही सही उत्तर है।

---

*उत्तर 4- A- सदा सहयोगी।

बाबा के पास सभी बच्चों के तीनों प्रकार के खाते जमा हैं। जो यज्ञ स्नेही हैं वह मन्सा-वाचा-कर्मणा, तन मन और धन तीनों सेवा में सदा सहयोगी बनते हैं। हर खाते की 100 मार्क्स हैं। अगर किसी की वाचा सेवा की ड्यूटी है तो उसमें मनसा और कर्मणा की पर्सेंटेज कम न हो। वाचा सेवा सहज है लेकिन मनसा पर अटेंशन देने की बात है और कर्मणा केवल स्थूल सेवा की बात नहीं लेकिन संगठन में सम्बंध सम्पर्क में आना ये भी कर्म के खाते में जमा होता है। मनसा वाले विशेषतः योगी होते हैं,तन और धन से सेवा करने वाले विशेषकर सेवाधारी होते अतः विकल्प सदा सहयोगी सही है। मुरली वरदान इस सन्दर्भ में *जो यज्ञ स्नेही हैं वह मन्सा-वाचा-कर्मणा तीनों सेवाओं के खाते जमा करने वाले यज्ञ स्नेही भव*

---

*उत्तर 5-A इनोसेंट

- इनोसेंट अपने देवताई संस्कारों को इमर्ज कर दिव्यता का अनुभव करने वाले व्यर्थ से इनोसेंट अर्थात् निर्दोष, अविद्या स्वरूप भव। जब आप बच्चे अपने सतयुगी राज्य में थे तो व्यर्थ वा माया से इनोसेंट थे इसलिए देवताओं को सेंट वा महान आत्मा कहते हैं। तो अपने वही संस्कार इमर्ज कर, व्यर्थ के अविद्या स्वरूप बनो। समय, श्वास, बोल, कर्म, सबमें व्यर्थ की अविद्या अर्थात् इनोसेंट। जब व्यर्थ की अविद्या होगी तब दिव्यता स्वत: और सहज अनुभव होगी इसलिए यह नहीं सोचो कि पुरूषार्थ तो कर रहे हैं – लेकिन पुरूष बन इस रथ द्वारा कार्य कराओ। एक बार की गलती दुबारा रिपीट न हो।जिस शक्ति का जिस समय आह्वान करो वो शक्ति उसी समय प्रैक्टिकल स्वरूप में अनुभव हो। आर्डर किया और हाज़िर इसे कहते हैं सिद्धि स्वरूप।

उत्तर -6 E - स्वपरिवर्तन से विश्व परिवर्तन होगा। इस तरह यदि ज्ञान मार्ग में चलने के बाद स्वयं में अपेक्षित परिवर्तन नहीं कर सकते तो दूसरों को बदलने की आश नहीं करनी चाहिए।समझाने से नही अपितु सदाचार को स्वयं व्यवहार में लाने से ही दूसरों पर प्रभाव पडता है।हां दूसरों को समझाने का प्रभाव स्वपरिवर्तन/

स्वयं में बदलाव के बाद अवश्य पडेंगा।इसलिए A और B दोनों सही हैं।

---

*उत्तर 7-D देह अभिमान और व्यर्थ।

विघ्नों की संख्या अगणित है, भय, संशय, आत्मविश्वास,आपदा,प्रतिकूल परिस्थितियां जिन पर हमारा नियंत्रण नहीं होती है। बड़े विघ्न पांच विकार हैं। बाबा कहते देह-अभिमान के कारण ही बच्चों से बहुत भूलें होती हैं। वह सर्विस भी नहीं कर सकते हैं।दूसरा, कोई भी संकल्प, बोल वा कर्म व्यर्थ नहीं जायें। किन्तु व्यर्थ के सम्बन्ध में अव्यक्त महावाक्य है-

विघ्न आना आवश्यक है और जितना विघ्न आना उतने शक्तिशाली बनो।विघ्नों को देख विघ्न-विनाशक बनने के बजाय, विघ्नों को देख अपनी स्टेज से नीचे तो नहीं आ जाते हो? क्या अनेक प्रकार के आये हुए तूफान आपकी बुद्धि में तूफान तो पैदा नहीं करते हैं?

---

*उत्तर 8-B खुशी का खजाना।

मुरली महावाक्यानुसार-चाहे आत्माओं में ज्ञान के प्रति, योग ... संगमयुग पर बापदादा ने सबसे बड़ा खजाना खुशी का दिया है। खुशी के लिए कहा जाता है - खुशी जैसी कोई खुराक नहीं, खुशी जैसा कोई खजाना नहीं। ..सबसे बड़े से बड़ा खज़ाना है खुशी का खज़ाना। इसी खुशी के लिए लोग तड़फते हैं। और आप सब सदा खुशी में नाचने वाले हो। आप सबके यादगार चित्र में भी खुशी का पोज़ दिखाया हुआ है - अपना चित्र याद है।अन्य खजाने ज्ञान से ज्ञान, शक्ति से अष्टशक्ति सम्पन्न और स्नेह से सर्व प्रति मधुर सम्पन्न बनेंगे।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (3) खण्ड -(5)

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं (1)- कर्म में योग का अनुभव होना अर्थात्

A योगयुक्त

B राजयोगी

C कर्मयोगी

D- उपरोक्त सभी

---

*प्रश्न सं (2)- शिव बाबा द्वारा मुरलियों में सुनाये हुए ज्ञान को क्या कह सकते हैं?

A-सच्ची अमरकथा

B-तीजरी की कथा

C-तीसरा नेत्र मिलने की कथा

D-A,B और C

E- A और B

---

*प्रश्न सं (3)- विजय माला के बारे में सही महावाक्य पहचानिए।

A-तुम अब विजय माला में पिरोने का पुरूषार्थ कर रहे हो ?

B-विजय माला 8 रत्नों की ही होती है।

C-सबसे ऊपर में है शिवबाबा फूल, फिर है जगत अम्बा, जगत पिता और उनकी 108 वंशावली।

D- A और C

---

*प्रश्न सं (4)- कौन सी बहुत अच्छी हिम्मत है?

A-पास होने के लिए मां-बाप

समान बनना है।

B-हम मात-पिता को फालो कर गद्दी पर बैठेंगे।

C-हम तो पूरा इम्तहान पास करेंगे।

D-हम अथक सेवाधारी बनेंगे।

---

*प्रश्न सं- (5) शिवबाबा नहीं है ?

A-त्रिमूर्ति ।

B-एक ओंकार ।

C-मास्टर सर्वशक्तिमान।

D-A और C

E-A और B

---

*प्रश्न सं- (6) शिवबाबा किसको नॉलेज सुनाते हैं सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त की ?

A-जीते जी मरकर अमरलोक में

चलने वालों को ।

B-एडाप्टेड चिल्ड्रेन को ।

C-जो गाते हैं - तुम मात-पिता उन

सबको।

D- A और B।

E-A,B और C

---

*प्रश्न सं- (7) तुम समझते हो शिव- बाबा हमारा सच्चा-सच्चा बाप है, जिससे किसका वर्सा मिलता है?

A- पवित्रता

B- सचखण्ड

C- परमधाम

D- A,B,C

E- A और B

प्रश्न सं -(8) बाप से कौन सी आशायें नहीं रखनी हैं ?

A-एक बाप की याद में रहना है

B- दो रोटी मिली, पेट भरा, बस

C-साक्षात्कार हो

D-आश कोई भी नहीं रखो, सिवाए बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेने।

E- C और D

खण्ड -5 प्रश्नोत्तरी के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

---

*उत्तर -1-C कर्मयोगी

कर्म करते हुए अर्थात् चलते-फिरते -उठते, खाते-पीते, स्नानादि करते हुए भी एक बाप को याद करना। वहीं राजयोग का अर्थ -जिससे आत्मा केवल परमात्मा की याद द्वारा अपने स्वयं के इन्द्रियों (कर्मेन्द्रियों, मन, बुद्धि) का मास्टर अथवा राजा बन जाती है।जो बन्धनमुक्त होगा वह सदैव योगयुक्त होगा। बन्धनमुक्त की निशानी है योगयुक्त। और, जो योगी होगा, ऐसे योगी का मुख्य गुण कौनसा दिखाई देगा?इस तरह योग की 3 स्थितियों में बाप की याद रहती है।परन्तु सूक्ष्म अन्तर है।हम ब्रह्मावत्स राजयोगी। कर्म करते हुये बाप की याद बनी रहती है।पर योगयुक्त स्थिति सर्वश्रेष्ठ है।

---

*उत्तर सं-2 (E) सच्ची अमरकथा और तीजरी की कथा।

शिवबाबा ने मुरलियों में सुनाये हुए ज्ञान को तीन कथा से जोड़कर मुरलियों में ही वर्णन किया है। इस सम्बन्ध में महावाक्य है-हम आत्माएँ, मनमनाभव की स्थिति में तीजरी की कथा, सच्ची सच्ची, सत्य नारायण की कथा और अमर कथा सुनाकर सबकी सच्ची उन्नति करनेवाले, नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनानेवाले, अमरलोक के रहवासी हैं..।अमर बाबा आया है। तुम्हें ज्ञान का तीसरा नेत्र देने आये हैं। महावाक्यों में यह कथा रूप में वर्णित न होने के कारण प्रश्न में दिये दो विकल्प सच्ची अमरकथा और तीजरी की कथा सही उत्तर है।

---

*उत्तर सं 3- (D) विजय माला 8 रत्नों की ही होती है।

कोई तो विजय माला के 8 दानों में आते हैं, कोई 108 में, कोई 16108 में।तुम बच्चे अब विजय माला में पिरोने का पुरूषार्थ कर रहे हो। महावाक्य अनुसार- 8 विजय माला के दाने बनते हैं। इसमें भी एक तो है मम्मा कुमारी और यह फिर है बूढ़ा ब्रह्ममम्मा-बाबा हैं शिवबाबा के मुरब्बी बच्चे। हम उनको पूरा फालो कर गद्दी पर बैठेंगे। बाबा। पर अष्टरतन सर्वश्रेष्ठ

विजयमाला के दाने होते हुए भी 108 और 16108 की विजयमाला होने से विकल्प B गलत और D सही।

---

*उत्तर सं 4- (B)हम मात-पिता को फालो कर गद्दी पर बैठेंगे।

सबसे अच्छी हिम्मत मम्मा-बाबा शिवबाबा के मुरब्बी बच्चे हैं, हम उनको पूरा फालो कर गद्दी पर बैठेंगे। जबकि अन्य हिम्मत भी जैसे क्रमशः मां बाप समान बनना,सभी ज्ञान,योग,धारणा, सेवा इम्तहान में पास होना,अथक सेवाधारी बनना भी हिम्मतवान बच्चों की निशानी है। पर माता पिता को पूरा फालो कर सुखधाम में गद्दीनशीन बनना सर्वोच्च हिम्मत है।

---

*उत्तर 5-D त्रिमूर्ति और मास्टर सर्वशक्तिमान।

त्रिमूर्ति में ब्रह्म, विष्णु और शंकर सूक्ष्म वतन वासी देवता हैं। शंकर को ऊंच नहीं रखते। ऊंच त्रिमूर्ति ब्रह्मा को रखते हैं। जैसे रचता शिव परमात्मा को कहते हैं, बाकी रचना होती है ब्रह्मा द्वारा। *तीनों मूर्तियों (सूक्ष्म देवों)की रचना करने के कारण त्रिमूर्ति बाप या त्रिमूर्ति भी कहते है*।ओंकार का अर्थ परम शक्ति/शिव बाबा से है । हम सभी सर्वशक्तिमान शिव बाबा की सन्तान मास्टर

सर्वशक्तिमान हैं, मास्टर बच्चे को कहते हैं। अतः विकल्प D सही है।

उत्तर 6-D, A और B दोनो विकल्प

भक्ति मार्ग में यह गीत सदा गाते आये- तुम मात-पिता हम बालक तेरे,पर संगम पर ब्रह्मामुखवंशी बच्चों के अलावा और कोई सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान नहीं जानते। *सुखधाम में मृत्यु का नाम नहीं, यह है मृत्युलोक, वह है अमरलोक।* शिव बाबा संगमयुग पर जीते जी मरकर अर्थात् मरजीवा बनने वालों को सृष्टि चक्र का राज बताकर अमरलोक चलने का रास्ता बताते हैं ।शिव बाबा ब्रह्मा द्वारा जिन बच्चों को एडॉप्ट करते हैं, उन्हें यह नॉलेज सुनाते हैं।बाबा कहते हैं यह ब्रह्मा माँ है। शिवबाबा ने ब्रह्मा माँ द्वारा तुमको एडाप्ट किया है। अभी तुम बाप के बने हो।

उत्तर सं 7- B सचखण्ड

संगम पर पहली *श्रीमत ही पवित्रता* की मिलती है वो भी नंबरवार जिससे हम भविष्य 21जन्म के लिए सचखंड के वर्से के अधिकारी बनते हैं। *हम बेहद के बाप से वर्सा ले रहे हैं। वर्सा तब

मिलेगा जब पवित्र बनेंगे।* वर्सा तो हमे स्वर्ग का ही मिलता है जहां *सुख, शान्ति और पवित्रता है ही।* इस तरह पवित्रता और सचखंड दोनों उतर सही हैं।परमधाम से जो कोई भी आत्मा पहले पहल आती है वो सतोप्रधान होती है।शिव बाबा से ज्ञान सुनकर वर्सा पाने वाली आत्मायें परमधाम वाया स्वर्ग में रहती है। वह 84 जन्म सुखधाम और दुखधाम में लेती है। अन्य धर्म की आत्मायें 2500 वर्ष बाद अपने अपने समय पर पार्ट बजाने आती हैं।अतएव सचखण्ड विकल्प सही है।

उत्तर सं 8- C साक्षात्कार हो।

शिव बाबा ज्ञान मुरलियों में बहुत सी आशा रखने को कहते हैं,जैसे बच्चे बाप को याद करें।बस दो रोटी मिले वह भी बहुत हैं। मनुष्य का पेट जास्ती नहीं खाता।। बच्चों को बाप कहते हैं - मीठे बच्चों आश कोई भी नहीं रखो, सिवाए बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेने।यज्ञ स्थापना के समय बच्चों को बहुत साक्षात्कार हुए थे।पर बाबा ने कहा है बच्चों अन्त में तुम ब्राह्मणों को बहुत साक्षात्कार होंगे।साक्षात्कार की आश न रख, निश्चय से पुरुषार्थ करना है.. बीमारी आदि कुछ भी आए ।दूसरी मुरली से

साक्षात्कार आदि की आश न रख निश्चयबुद्धि बन पुरूषार्थ करना है।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (3) खण्ड -(6)

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं (1) कौन सा देश प्यारा लगता है ?

A- निर्वाणधाम

B-साकार लोक

C-जहाँ जन्म लेते हैं वह

D-सूक्ष्म लोक

प्रश्न सं (2) एक ही कौन सा (सबसे बड़ा) पु.रूषार्थ करो ?

A-सदाकाल तख्तनशीन रहने का

B-मन्सा सेवा का

C-अनेक आत्माओं को मिलाने का

D-साक्षी और खुशनुमा तख्तनशीन रहना है।

प्रश्न सं- (3) पुरुषोत्तम संगम युग है डायमण्ड, सतयुग है गोल्ड, त्रेता है सिलवर....संगम युग डायमण्ड क्यों है ?

A-संगम पर ही हम मनुष्य से देवता बनते हैं।

B-यह हीरे जैसा जन्म है।

C-रूहानी फादर और रूहानी नॉलेज संगम पर ही मिलती है।

D -B और C

E-A,B और C

प्रश्न सं-(4) भारत सब खण्डों में श्रेष्ठ है क्यों ? -

A-भारत तो अविनाशी खण्ड है।

B-प्रलय भी नहीं होती है।

C-विनाश कभी नहीं होता।

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं- (5) मुक्ति-जीवनमुक्ति का अधिकार देने के लिए मंत्र ?

A-मनमनाभव

B- मामेकम् याद करो

C- देह सहित देह के सब सम्बन्धों को

त्याग बाप को याद करो।"

D- A और B

E- A,B और C

प्रश्न सं -(6)-माया के खिलौने बड़े क्या हैं ?

A -लुभाने वाले

B- आकर्षण वाले

C- प्रभावित करने वाले

D-डर

प्रश्न सं (7)- सदा हर्षित रहना है तो विश्व ड्रामा की हर सीन को क्या होकर देखो ?

A- उपराम

B- ट्रस्टी

C-साक्षी

D-A और C दोनों

प्रश्न सं (8)-निश्चय से विजय पाते हो। संशय भूत से किसको पाते हो ?

A- दुर्भाग्य

B- हार।

C- विनाश

D-अनिश्चय

खण्ड -6 प्रश्नोत्तरी के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1- A निर्वाणधाम

हम आत्मायें परमधाम, निर्वाण देश से आती हैं। परमधाम से दूर और कोई देश नहीं है।यहाँ आया हूँ तुम बच्चों का बुद्धियोग वहाँ लगाने के लिए। हे बच्चे, मुझे अपने परमधाम घर में याद करो। इसलिए इसे पियर घर और स्वीट होम कहते हैं।पियर घर सबसे प्यारा होता है। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर अपनी-अपनी सूक्ष्म पुरियों में रहते हैं।इस लोक में जन्म-मरण या दुःख-सुख नहीं होता हैं और न ही ध्वनि होती हैं। यहाँ बोलते हैं पर आवाज़ नहीं होती। साकार लोक में हम सभी आत्माएं इस भौतिक शरीर को धारण कर कर्म करती हैं व दुःख-सुख का खेल करती हैं और इन्हीं के आधार पर फ़ल भोगती हैं।बाबा ने एक अव्यक्त मुरली में विदेश मे रहने वाले भारतवासियों के सन्दर्भ मे अवश्य कहा है स्वीट होम भारत में जाते हैं। जहाँ जन्म लेते हैं वह देश प्यारा लगता है। कहते हैं हमको स्वीट होम (भारत में) ले चलो। परन्तु सम्यक् श्रीमत् निर्वाणधाम को ही सही विकल्प सिद्ध करती है।

उत्तर सं 2- D साक्षी और खुशनुमा तख्तनशीन रहना है।

यहां तीनों पुरूषार्थ मनसा सेवा,आत्माओं को ज्ञान देना और सदा तख्तनशीन रहना श्रेष्ठ पुरुषार्थ हैं, परन्तु अव्यक्त मुरली अनुसार- साक्षीपन के तख्तनशीन आत्मा कभी भी कोई समस्या में परेशान नहीं हो सकती। समस्या तख्त के नीचे रह जायेगी और आप ऊपर तख्तनशीन होंगे।यहाँ सदाकाल तख्तनशीन नहीं होंगे तो वहाँ भी सदा अर्थात् जितना समय फुल है, उतना समय नहीं बैठ सकेंगे।एक ही पुरुषार्थ करो कि साक्षी और खुशनुमा तख्तनशीन रहना है। यह तख्त कभी नहीं छोड़ना है। ...

उत्तर 3-E A,B और C तीनो विकल्प सही।

पांचों युगों में सतयुग को गोल्डन युग कहा गया है।परन्तु संगमयुग को *डायमंड* अर्थात् हीरे जैसा जन्म कहा गया क्योंकि यहीं संगम पर ही हम मनुष्य से देवता बनते हैं। रूहानी परमपिता परमात्मा और उसका रूहानी ज्ञान हमें इस संगम पर प्राप्त होती है। इसलिए यहां *तीनों वाक्य सही होने से विकल्प E* सही है।

---

*उत्तर 4-D*उपरोक्त सभी

सिर्फ एक *भारत ही अविनाशी खण्ड* है, बाकी सब हैं विनाशी खण्ड।और सभी खण्डों का विनाश हो जाता है।जो भी खण्ड हैं उन सबमें भारत खण्ड सबसे बड़ा है। बाबा की जन्मभूमि है । बाकी जो इस समय खण्ड हैं वह सब खत्म हो जायेंगे। चारों युग में आत्मायें सतो रजो तमो अवस्था में रहती हैं।बाबा ने कहा प्रलय के सम्बन्ध में-शास्त्रों में तो टोटल विनाश लिख दिया है। परन्तु टोटल विनाश तो होना नहीं है, फिर तो प्रलय हो जाए। मनुष्य कोई भी न रहें सिर्फ 5 तत्व रह जाएं। ऐसे तो हो नहीं सकता। प्रलय हो जाए तो फिर मनुष्य कहाँ से आये । दिखाते हैं कृष्ण अंगूठा चूसता हुआ

पीपल के पत्ते पर सागर में आया। बालक ऐसे आ कैसे

सकता।

उत्तर सं 5 E* A ,B और C तीनो विकल्प सही।

मुक्ति - जीवन-मुक्ति मिलने के सम्बन्ध तीन मंत्रों का उल्लेख विविध मुरलियों में किया गया है।

1- *मनमनाभव* शब्दकोश अनुसार स्वयं को आत्मा समझ मुझ एक बाप को याद करो। मुरली अनुसार- तुम सेकेण्ड में मुक्ति-जीवनमुक्ति पाने के पुरूषार्थी हो एक मनमनाभव के मंत्र के द्वारा।तुम मुक्ति जीवनमुक्ति पा लेंगे।...सभी को मनमनाभव का वशीकरण मंत्र सुनाना है।

2- *मामेकम् याद करो*-हे आत्मायें मामेकम् याद करो,दूसरा न कोई। सर्व धर्मानि परित्यज्य मामेकम् शरणम् व्रज अहं त्वा सर्वपापोभ्यो मोक्षयिष्यामि।'सभी को सेकेण्ड में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अधिकार देने के लिए यही महामंत्र सुनाना है कि *_“सबको मंत्र मिलता है कि देह सहित देह के सब सम्बन्ध त्याग मामेकम् याद करो तो तुम मेरे पास आ जायेंगे।"_*

3- मुक्ति-जीवनमुक्ति का अधिकार देने के लिए मंत्र-सभी को सेकेण्ड में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अधिकार देने के लिए यही महामंत्र सुनाना है कि *_“देह सहित देह के सब सम्बन्धों को त्याग बाप को याद करो।"_*

उपरोक्त तीनों मंत्र का एक ही भाव है कि मुक्ति जीवन-मुक्ति के लिए स्वयं को आत्मा व सर्व सम्बन्धों को त्याग बाप की याद में रहना।

उत्तर सं 6- B* आकर्षण वाले

माया जीत बनना कोइ मासी का खेल नहीं हैं। अव्यक्त मुरली -सारे दिन में क्या क्या खेल करते हो - ये रात्रि को चेक करते हो ना? माया के खिलौने बड़े आकर्षण वाले हैं। तो उन खिलौनों से खेलने लग जाते हो। पहले तो बहुत प्यार से माया खेल कराती है और खेल कराते कराते जब हार खिलाती है तब होश में आते हैं। माया के खिलौने सांसारिक नश्वर वस्तुएं हमें सबसे ज्यादा आकर्षित करती है।वे लुभाती हैं और हम पर प्रभाव भी डालती है,तभी उनसे आकर्षित होते हैं।

उत्तर सं 7- D* उपराम और साक्षी।

साक्षी भाव का अर्थ है कि व्यक्ति अपनी गतिविधियों को बिना किसी रुचि के दर्शक की तरह देखे. इसमें आत्मा और शरीर को अलग माना जाता है. इसमें व्यक्ति को तटस्थ रहकर दर्शक की भूमिका निभानी होती है।

उपराम का अर्थ है- न्यारापन,राम के समीप होना।योगयुक्त रहकर चित्त को सर्व-सम्बन्ध, सर्व प्रकृति के आकर्षण से न्यारा हो जाना ही उपराम होना है।

उपराम वृति द्वारा साक्षी वा न्यारी स्तिथि में स्थित रह ड्रामा की हर सीन को साक्षी हो कर देखना है। बाबा कहते हैं- सदा उमंग उत्साह में रहने वाली आत्मा ड्रामा की हर सीन को साक्षी हो कर देखती है। ट्रस्टी स्थिति ड्रामा की हर सीन से सम्बन्धित नहीं है।

उत्तर सं 8- C* विनाश

निश्चयबुद्धि विजयन्ति और संशयबुद्धि विनश्यन्ति।निश्चय से सदा विजय मिलती है।बाबा कहते हैं-निश्चय से विजय पाते हो। संशय भूत से विनाश को पाते हो। संशय को भूत. कहा जाता; निश्चय को भूत नहीं कहा जाता।अपने में ही जरा सा संकल्पमात्र भी संशय आता है कि यह होगा या नहीं होगा, तो विजय नहीं होगी। अविवेकी संशय करता है, ऐसा होना दुर्भाग्य भी है,संशय में गलत निर्णय से हार भी होती है। संशय का पर्याय अनिश्चय है। परन्तु सबसे उपयुक्त उत्तर विनाश ही है।

-

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (4) खण्ड -(7)

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- मैजारिटी में कौन से शक्ति की कमी रह जाती है?

A- परखने की शक्ति की

B- निर्णय शक्ति की

C- परिवर्तन शक्ति की

D-सहनशक्ति

प्रश्न स़ 2- शान्ति कोई जंगल में नहीं मिलती, लेकिन आत्मा का क्या ही शान्ति है ?

A-निजी गुण

B-स्वरुप

C-स्वधर्म

D-A , B और C

E- A और C-

प्रश्न सं 3- 1- तुम कौन हो, तुम्हें भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा करनी है, दुःखधाम को सुखधाम बनाना है ?

A -रूहानी सोशल वर्कर

B -खुदाई खिदमतगार

C -रूहानी मिलिट्री

D- A और B

E- A, B और C

प्रश्न सं 4-किस का अर्थ है नम्बरवन पास विद् ऑनर होना?

A- लक्ष्मीनारायण

B- विजयमाला में आने वाले

C- ब्रह्मा और सरस्वती

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 5- अभी तुम्हारा दोनों ताज नहीं रहा है - न लाइट का, न राजाई का, किसको ही लाइट का ताज देते हैं?

A- पवित्र

B- ब्राह्मण

C- निर्विकारी

D- देवता

प्रश्न सं 6- तुमको तो अपने बाप को निरन्तर याद करना है। यह कोई कॉमन सतसंग नहीं है, यह बड़ी क्या है ?

A- युनिवर्सिटी

B- विद्यालय

C-अस्पताल कम युनिवर्सिटी

D-A, B और C

E- A और C

प्रश्न सं 7- शिव बाबा के बार में कौन सा कथन सत्य नहीं है ?

A- सचखण्ड का मालिक

B- प्रकट है

C- विश्व का मालिक

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 8- बाप क्या वर्सा देते हैं-

A-घर का,

B-पढ़ाई का

C-स्वर्ग की बादशाही का

D-उपरोक्त सभी का

पार्ट 4 खण्ड 7 के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1-C परिवर्तन शक्ति की।

अव्यक्त बापदादा- मैजारिटी अर्थात् बहुसंख्यक में परिवर्तन शक्ति की कमी है।मेजोरिटी अथक बनते हो लेकिन कभी ... स्वपरिवर्तन से दूसरे का परिवर्तन कर सकते हो।नहीं तो अब तक अनेक अल्पज्ञ अयथार्थ मान्यताओं द्वारा मेजोरिटी आत्मायें विश्व परिवर्तन वा स्वयं का परिवर्तन अति मुश्किल नहीं होता...अष्ट शक्तियों परखने, निर्णय, सहनशक्ति आदि एवं ज्ञान ,पवित्रता और शान्ति आदि शक्ति होने पर ही परिवर्तन शक्ति काम करती है।अष्ट शक्तियों में सहनशक्ति को सबसे बड़ा सिद्ध किया जाता है। परन्तु इन अनेक शक्तियों का प्रयोग कर ही हम *स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के निमित्त बन सकते है।*

उत्तर सं 2- D स्वधर्म,निजी गुण, स्वरूप।

आत्मा शरीर से अलग है तो शांत है। शरीर के अंदर है, तो देहभान में है,अशांत है।आत्मा का स्वधर्म तो शान्ति है। वह अपने स्वधर्म को भी नहीं जानते हैं। आत्मा के सात गुणों में में शांति भी

निजी गुण है। ओम् शान्ति... शान्ति मेरा स्वधर्म, निजी गुण, अनादि संस्कार, गले का हार है... मेरी शक्ति है।शांत स्वरुप आत्मा हूँ' व 'मेरा स्व-धर्म शांति है'।इस तरह आत्मा का स्वधर्म शांति ही नहीं, निजी गुण और स्वरुप भी है। बाबा कहते हैं -देह-अभिमान वाले ही यह शब्द बोलते हैं क्योंकि उन्हें आत्मा का ज्ञान ही नहीं है। *तुम जानते हो आत्मा का स्वधर्म ही शान्त है।*

उत्तर 3 - E जिसके A, B और C उतर सही।

भारत को स्वर्ग अर्थात् दुःखधाम से सुखधाम बनाने वालों के सम्बन्ध में अनेक वर्णन महावक्यों में है,यथा-

1-तुम रूहानी सोशल वर्कर हो, तुम्हें भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा करनी है, ...तुम बच्चों को रूहानी सोशल वर्कर कहा जाता है। सोशल वर्कर भारत में बहुत हैं, उन्हों को भी ...

2-सच्चा खुदाई खिदमतगार बन भारत को स्वर्ग बनाने में बाप को पवित्रता की मदद करनी है।परन्तु आप सब तो हैं ही 'खुदाई खिदमतगार'। सिर्फ भगवान का नाम लेने वाले नहीं लेकिन भगवान के साथी बन श्रेष्ठ कार्य करने वाले हैं।

3- इस संगम के ईश्वरीय संसार में बाबा हम रूहानी मिलिट्री को कहते... ... स्वर्ग का मालिक बन।तुम मनुष्य को स्वर्ग का मालिक बना सकते हो। तुम रूहानी सेना हो।

4- सच्चे रूहानी सैलवेशन आर्मी बन भारत को विकारों से सैलवेज करना है।

उपरोक्त महावाक्यों से सिद्ध है कि बाबा ज्ञान सेवा आदि में आगे करने के लिए *विभिन्न उपाधि/टाइटल से सुशोभित/ अलंकृत कर चमत्कृत करता रहता है।*

उत्तर 4- A लक्ष्मीनारायण

पास विद् ऑनर अर्थात् जो सम्मान सहित उत्तीर्ण होंगें । जिनको कोई सज़ा के बिना परमधाम जाना हैं।पास विद ऑनर बिना धर्मराज की सजाओं के अनुभव से पास होंगे। विजयमाला में 8,108, 16108 की माला होगी। जिसमें 8 अष्टरतन सर्वश्रेष्ठ होंगें। अष्टरतन में प्रथम दो ब्रह्मा बाबा और मम्मा का उल्लेख बाबा ने मुरलियों में किया है। यही दोनों सम्पूर्ण होकर अन्त में परमधाम वाया सुखधाम आते हैं, तो *नम्बरवन पास विद् आनर् लक्ष्मीनारायण होते हैं।*

उत्तर सं 5- A- पवित्र

देवता थे तब लाइट का ताज और रतन जड़ित ताज दोनों थे। ... डबल ताज वालों को पूजते है। अव्यक्त महाकाव्य -डबल ताजधारी (पवित्रता का ताज और रतन-जड़ित ताज)... हर चीज़ नई।डबल सिरताज देवता बनते हैं। बरोबर तुम बन रहे हो। देवताओं को दोनों ताज रहते हैं।संगमयुग का डबल ताज एक है स्नेह का दूसरा है सर्विस का।

उत्तर सं 6-E A, और C दोनों

जगदीश भ्राता के सत्प्रयासों से ओम् मंडली का नाम प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय नाम पड़ा। यह संस्था अपने यथा नाम यूनिवर्सिटी को आज चरितार्थ कर रही। यूनिवर्सिटी यें कुछ दर्जन महा विद्यालय जुड़े होते हैं। पर इस संस्था के जिसका मुख्यालय प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय माउण्ट आबू है उससे हज़ारों मुख्य सेवा केन्द्र पूरे विश्व में व गीता पाठशालायें विद्यालय के रूप में जुड़ीं हुई हैं। जिसमें बहुत से ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी नियमित क्लास लेते हैं। मुरली से -शिवबाबा की श्रीमत ... सफल कर सफलता पाओ .. तुम यह

रूहानी हॉस्पिटल कम यूनिवर्सिटी खोलते जाओ ...।अगर शिवबाबा न आये तो सब वर्थ नाट ए पेनी हों। ... *यह एक हॉस्पिटल-कम-यूनिवर्सिटी है।*

उत्तर 7-D शिव बाबा के सम्बन्ध में उपरोक्त सभी कथन असत्य हैं।

सचखण्ड बाबा स्थापन करते हैं।बाबा सच सुनाकर हम बच्चों को सचखण्ड का मालिक बनाते हैं। बाबा कहते हैं तुमको सचखंड का मालिक बनाता हूँ, मैं नहीं बनता हूँ। स्वर्ग में तुम मुझे याद नहीं करते हो।बाबा है गुप्त, ज्ञान का सागर। इस दुःखमय संसार (नर्क) को सुखमय संसार (स्वर्ग) में परिवर्तन करने का महान कार्य गुप्त रूप में करा रहे हैं। यद्यपि *ज्ञान सूर्य प्रकटा अज्ञान अंधेर विनाश* अर्थात् शिव बाबा जन्म नहीं लेते, वह तन का आधार लेते हैं। वह रचयिता है जिसके द्वारा रचना की नॉलेज मिलती है। पर वह प्रत्यक्ष न होने के कारण गुप्त रूप से इस महान कार्य को कराते हैं। गुप्त का विलोम प्रकट है। शिव बाबा का गुप्त भाग/पार्ट 1936 के आसपास शुरू हुआ था जिसे आज हम जानते है। बाबा से वर्सा ले तुम्हें विश्व का मालिक बनाता हूँ। इस तरह स्पष्ट है शिव बाबा मालिक नहीं है।

उत्तर सं 8-C स्वर्ग की बादशाही का।

मुरली से- शिवबाबा को थोड़े-ही मकान आदि बनाना है। यह ईश्वरीय पढ़ाई भी सोर्स आफ इनकम है, जिससे बेहद की बादशाही मिलती है। पढ़ाई, पवित्रता,योग, सेवा आदि से हमें बेहद की बादशाही मिलती है।परन्तु यह सब साधन है, कर्तव्य हैं। अधिकार या वर्सा स्वर्ग की बादशाही मिलना है। बिना कर्तव्य अधिकार की आश नहीं करनी चाहिए। शिवबाबा की पढ़ाई जो सोर्स आफ इनकम है उससे स्वर्ग की बादशाही प्राप्त होती है। इसलिए वर्सा घर और पढाई न होकर स्वर्ग की बादशाही प्राप्त करना है।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (4) खण्ड -(8)

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- गीता द्वारा ही बाप ने कौन सी नॉलेज दी है?

A-देवी देवता धर्म की

B-मामेकम् याद करो।

C-प्राचीन सहज राजयोग की

D- मामेकम् शरणं व्रज

प्रश्न सं 2- आस्तिक-नास्तिक, जानना, न जानना कब होता है?

A-सतयुग

B- संगम

C- कलयुग

D- द्वापर और कलियुग दोनों में

प्रश्न सं 3- ब्रह्मा बाप ने बाप के श्रीमत पर पहला कदम क्या उठाया?

A- आज्ञाकारी बने

B- सेवाधारी बने

C- योगी तु आत्मा बने

D-ज्ञानी तू आत्मा

प्रश्न सं 4- कौनसे एक अक्षर में इतनी ताकत है जो देह अभिमान और देह भान सदा के लिये समाप्त हो जाता है ?

A-मनमनाभव

B-मध्याजीव भव

C-करनकरावनहार

D-मामेकम्

प्रश्न सं-5--सारी सृष्टि में सबसे साहूकार ते साहूकार कौन हैं-

A-ब्रह्मा बाप

B-स्वर्ग के लक्ष्मी-नारायण

C-शिव बाबा

D-संगमयुगी ब्राह्मण

प्रश्न सं-6- जगदम्बा ने किस गुण के कारण फुल खाता जमा किया है ?

A- अंतर्मुखता

B- गम्भीरता

C- समर्पणता

D- सेवा

प्रश्न सं 7- जब फाइनल रिज़ल्ट होगी, उसमें पहली मार्क्स किसको मिलेगी ?

A- प्रैक्टिकल सेवाधारी स्वरूप

B- प्रैक्टिकल धारणा स्वरूप

C- ज्ञानी और योगी तू आत्मा

D- सफलतामूर्त आत्मा

प्रश्न सं 8-गति अथवा मुक्ति मिलती है-

A- कलियुग में

B परमधाम (निर्वाणधाम) में

C संगमयुग में

D सभी

पार्ट (4) खण्ड {8} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1-C प्राचीन सहज राजयोग की।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था में सिखाये जाने वाला राजयोग भारत का सबसे प्राचीन और परमात्मा द्वारा सिखाया जाने वाला योग है। शिवबाबा स्वयं साधारण मनुष्य तन में आ करके 'गीता-ज्ञान' और सहज राजयोग की शिक्षा देते हैं।सहज राजयोग की शिक्षा देकर इस सृष्टि का पूर्ण परिवर्तन करा देते हैं। 7 दिवसीय कोर्स को मुख्य रूप से राजयोग कोर्स भी कहा जाता है।इसके अन्तर्गत ही बाबा देवी देवता धर्म का,मामेकम् याद करो, मामेकम् शरणं व्रज का ज्ञान दे रहे हैं।अतएव प्राचीन सहज राजयोग सबसे उपयुक्त विकल्प है।

उत्तर सं-2-"B" संगम।

आस्तिक-नास्तिक, जानना, न जानना संगम पर ही होता है। अब तुम बच्चे जानते हो, हम बाबा द्वारा आस्तिक बने हैं। मात-पिता मिले तो हो गये आस्तिक। सतयुग में तो है ही प्रालब्ध। वहाँ आस्तिक वा नास्तिक का तो सवाल ही नहीं उठता। बच्चे अब जानते हैं - जो कल नास्तिक थे, बाप और बाप की रचना को नहीं जानते थे, वही अब आस्तिक बने हैं। बाप को और अपने 84 जन्मों को जान गये हैं। कल नहीं जानते थे, आज जानते हैं। बाबा के इन महावाक्यों से स्पष्ट है सतयुग में देवता ईश्वर को न जानने के कारण आस्तिक नास्तिक का सवाल नहीं उठता और द्वापर और कलियुग में परमात्मा और अपना सत्य परिचय न जानने के कारण नास्तिक हैं। संगम पर जब बाबा सहज राजयोग ज्ञान की शिक्षा ब्रह्मावत्सों को देते हैं,तभी ब्राह्मण बन नास्तिक से आस्तिक बनते हैं। इसलिए *संगम* उत्तर सही है।

उत्तर सं- 3- "A" आज्ञाकारी बने।

महावाक्यानुसार ब्रह्मा बाबा ने बाप के श्रीमत पर पहला कदम क्या उठाया? पहला कदम आज्ञाकारी बने। जो आज्ञा मिली उसी पर चल पड़े।सदा आज्ञाकारी रहे। हर समय एक बात में - चाहे

स्व पुरुषार्थ में, चाहे यज्ञ-पालना में निमित्त बने। क्योंकि स्व ही ब्रह्मा विशेष आत्मा है जिसका ड्रामा में पार्ट नूंधा हुआ है। एक ही आत्मा – माता भी है, पिता भी है। यज्ञ-पालना के निमित्त होते हुए भी सदा आज्ञाकारी रहे। स्थापना का कार्य विशाल होते हुए भी किसी भी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया। हर समय 'जी हाज़िर' का प्रत्यक्ष स्वरूप सहज रूप में देखा। वे अथक सेवाधारी, ज्ञानी तू आत्मा,योगी तू आत्मा भी थे। वैसे तो एक अव्यक्त मुरली में पहला कदम सर्वस्व त्यागी है।पर यह विकल्प न होने से दूसरा कदम *आज्ञाकारी* बने सही विकल्प है।

उत्तर सं - 4"C" करनकरावनहार।

बाबा कहते हैं करनकरावनहार अर्थात् करने करानेवाला एक अक्षर में इतनी ताकत है जो देह अभिमान और देह भान सदा के लिये समाप्त हो जाता है।सदा करनकरावनहार बाप की स्मृति में रहकर मैं पन, देह का भान और अभिमान समाप्त करना है। शिवबाबा तो *करनकरावनहार* है और हम सब आत्मायें इस सृष्टि रंगमंच पर अपना-अपना पार्ट अदा कर रही हैं, यदि यह श्रेष्ठ स्मृति रहे तभी देहभान में नहीं आ सकती। मनमनाभव अर्थात् परमात्मा को याद करने से है, मध्याजी भव अर्थात् ब्रह्मा और

शंकर के मध्य विष्णु स्वरूप होने से है और मामेकम् अर्थात् केवल एक मुझे याद करने से है।जिससे भी देह अभिमान नहीं होता। परन्तु *करनकरावनहार* सबसे सुसंगत और सटीक विकल्प है।

उत्तर सं 5- "B" स्वर्ग के लक्ष्मी-नारायण ।

यह फिर है पुरूषोत्तम संगमयुग। यह संगम का भी एक त्योहार है। यह त्योहार सबसे ऊंच है। तुम जानते हो अभी हम पुरूषोत्तम बन रहे हैं। उत्तम ते उत्तम पुरूष। *ऊंच ते ऊंच साहूकार से साहूकार नम्बरवन कहेंगे लक्ष्मी-नारायण को।* सृष्टि भर में सबसे साहूकार कौन! सारी सृष्टि में सबसे साहूकार ते साहूकार स्वर्ग के लक्ष्मी नारायण हैं। ऐसा कौन आकर सुनाते हैं? बाप। बच्चे जानते हैं हमारे जैसा भविष्य 21 जन्मों के लिए सम्पत्तिवान कोई नहीं बनता।जब आदि सनातन देवी-देवता धर्म था,बहुत साहूकार मालामाल था। शिव बाबा सृष्टि का रचता है वह हमें संगम पर ज्ञानयोग सुनाकर स्वर्ग का साहूकार बनाते हैं। संगमयुगी ब्राह्मण सबसे खुशनसीब हैं जो ज्ञान डांस करते हैं।

उत्तर सं 6- "B" गम्भीरता।

जगदम्बा की विशेषता - जमा का खाता। जो गम्भीरता के गुण ने फुल खाता जमा किया है। महावाक्य अनुसार- जिसमें * (गम्भीरता) फुल खाता जमा* किया है। कट नहीं हुआ है। अन्तर्मुखता भी मम्मा की प्रमुख विशेषता थी।समर्पणता व सेवा के गुण तो थे ही।पर वह सबसे बड़ा गुण गम्भीरता के कारण फुल खाता जमा किया।

उत्तर सं 7- "B" प्रैक्टिकल धारणा स्वरूप।

जब फाइनल रिजल्ट होगी, उसमें पहली मार्क्स प्रैक्टिकल धारणा स्वरूप को मिलेगी।जब रिज़ल्ट निकलेगी तो रिजल्ट में यह नहीं देखा जायेगा कि इसने ज्ञान का मनन अच्छा किया या सेवा में ज्ञान को अच्छा यूज़ किया। इस रिज़ल्ट के पहले स्वचिन्तन और परिवर्तन, स्वचिन्तन करने का अर्थ ही है परिवर्तन करना। तो जब फाइनल रिजल्ट होगी, उसमें पहली *मार्क्स प्रैक्टिकल धारणा स्वरूप* को मिलेगी। जो धारणा स्वरूप होगा वो नेचुरल योगी तो होगा ही। अगर मार्क्स ज्यादा लेनी है तो पहले जो दूसरों को सुनाते हो, आजकल वैल्यूज़ पर जो भाषण करते हो, उसकी पहले स्वयं में चेकिंग करो क्योंकि सेवा की एक मार्क तो धारणा स्वरूप की 10 मार्क्स होती हैं, अगर आप ज्ञान

नहीं दे सकते हो लेकिन अपनी धारणा से प्रभाव डालते हो तो आपके सेवा की मार्क्स जमा हो गई।

उत्तर सं 8 - "B" *परमधाम (निर्वाणधाम)*

गति अथवा मुक्ति *निर्वाणधाम* में मिलती है।शान्ति मिलती है मुक्तिधाम में और सुख मिलता है जीवनमुक्ति में। तो मुक्ति और जीवनमुक्ति इन दोनों चीज़ों की प्राप्ति भगवान के सिवाए दूसरा कोई करा न सके।आपकी सद्गति के साथ-साथ सर्व आत्माओं को गति अर्थात् मुक्ति मिल जाती है। सब आत्मायें जहाँ रहती हैं वह है *निर्वाणधाम*, स्वीट होम। मुक्ति को तो सभी याद करते हैं, जहाँ हम बाप के साथ रहते हैं।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (5) खण्ड -{9}

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- पहले कौनसा पक्का निश्चय हो-

A मैं आत्मा हूँ

B मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई

C- मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूं।

D- उपरोक्त सभी।

प्रश्न सं 2- भक्तों के पास भगवान को आना पड़ता है किसलिए-

A- माया की जंजीरों से लिबरेट करने

B- भक्ति का फल देने

C- गाइड बन साथ ले जाने

D- A,B और C

E- A और B

प्रश्न सं 3-वह हद के यज्ञ रचते हैं सेठ लोग। उसमें रूद्र यज्ञ नामीग्रामी है। वह उसमें ..... अक्षर नहीं लगाते हैं।

A- राजस्व

B- अश्वमेध

C- अविनाशी

D- ज्ञान

प्रश्न सं 4- पवित्रता ही सुख और शान्ति का आधार है ।
पवित्र बनो तो तुम्हारे सब .....हो जायेंगे ?

A- दुःख दूर

B- कष्ट खत्म

C- भंडारे भरपूर

D- विकर्म विनाश

प्रश्न सं 5- बाबा ने लॉकेट (बैज) भी बनवाये हैं। एक तरफ त्रिमूर्ति दूसरे तरफ कौन ?

A- शिव बाबा

B- सृष्टि चक्र

C- श्रीकृष्ण

D- ब्रह्मा बाबा

प्रश्न सं 6-आत्मा शरीर को चलाने वाली है, आत्मा में संस्कार रहते हैं, रात को.. .....बन जाती है?

A- अशरीरी

B- देह से न्यारी

C- विदेही

D- देहीभिमानी

प्रश्न सं 7- तुम्हारा यादगार अमरलोक में नहीं रहेगा, तुम्हारा यादगार पीछे.....में चाहिए ?

A- द्वापर

B- कलियुग

C- संगम

D-परमधाम

प्रश्न सं 8- तुम्हें बेहद के बाप से ..... का शुद्ध लोभ और एक बाप में ही पूरा मोह रखना है ?

A- अविनाशी खज़ानें

B- स्वर्ग का वर्सा

C- ज्ञान रत्न

D- सर्व शक्तियों की प्राप्ति का

पार्ट (5) खण्ड {9} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1-"A" *मैं आत्मा हूं।*

पहले तो अपने को आत्मा समझना है।पहले-पहले *आत्मा* का निश्चय चाहिए कि हम आत्मा अविनाशी हैं। इसके बिगर तो कुछ भी बुद्धि में नहीं बैठेगा। पहले निश्चय चाहिए कि हम आत्मा और आत्माओं का बाप वह निराकार परमात्मा है।स्वयं को *आत्मा* निश्चय करने और आत्मिक दृष्टि - वृति का अभ्यास आत्मा को कर्मेन्द्रियजीत बनाता है।मनुष्य में एक तो आत्मा है, दूसरा शरीर है। 5 तत्वों का पुतला बनता है।उसमें आत्मा प्रवेश कर पार्ट बजाती है। दूसरा निश्चय मेरा तो शिवबाबा दूसरा न कोई।इस तरह पहले पहले अपने को *आत्मा निश्चय* करना होता है।

उत्तर सं 2-"D" *A,B और C तीनों सही*

भगवान को आना पड़ता है - माया की जंजीरों से लिबरेट करने। बाबा कहते हैं - मैं आकर दु:खों से लिबरेट करता हूं और गाइड बन साथ ले जाने वाला हूं।तुम पर माया रावण ने 2500 वर्ष राज्य किया है। यह माया बड़ी बलवान है।उनको तो लिबरेट करने में 40-50 वर्ष लगे। मेहनत लगती है। यहाँ भी तुम श्रीमत पर जीत पाते हो। रावण तुम्हारा बड़ा पुराना दुश्मन हैं।तुमको गोली

मारती है माया दुश्मन। गाते हैं कि भक्तों को भक्ति का फल देने के लिए भगवान को आना ही पड़ता है ।भक्तों को भक्ति का फल मुक्ति-जीवनमुक्ति ...ही है।भक्ति में दु:ख बहुत है। बाबा कहते हैं...वह सुप्रीम आकर इनको आप समान सुप्रीम बनाये साथ ले जाते हैं।सब आत्माओं का गाइड है।इस तरह शिव बाबा *गाइड* भी है, *भक्ति का फल* भी देते हैं और *माया की जंजीरों से लिबरेट* भी करते हैं।

उत्तर सं 3-"D" ज्ञान।

रूद्र ज्ञान यज्ञ नाम तो है ना। यज्ञ रचा जाता है ब्राह्मणों से। तुम ब्रह्माकुमार कुमारियाँ ब्राह्मण ठहरे। वह हद के यज्ञ रचते हैं सेठ लोग। उसमें रूद्र यज्ञ नामीग्रामी है। वह उसमें ज्ञान का अक्षर नहीं लगाते हैं। यह तो है रूद्र ज्ञान यज्ञ। उनको ज्ञान यज्ञ नहीं कहेंगे। भक्ति मार्ग में देखो रूद्र यज्ञ कैसे रचते हैं। ... वह है हद का संन्यास, यह है बेहद का संन्यास।। वैसे ही रूद्र यज्ञ रचते हैं। वास्तव में रूद्र ज्ञान यज्ञ है। इस यज्ञ को बाबा ने यह भी कहा है यह है *रुद्र शिवबाबा का राजस्व अश्वमेध ज्ञान यज्ञ।*

उत्तर सं 4- "C" भण्डारे भरपूर

पवित्रता सुख शान्ति सम्पत्ति सब कुछ था। पवित्रता नहीं है तो न शान्ति है, न सुख।बाप आये ही हैं *पवित्रता-सुख-शान्ति का भण्डारा भरपूर* करने। सतयुग में विश्व महाराजा महारानी बनेंगे। सतयुग है ही पवित्र आत्माओ की दुनिया जहाँ सदा सुख ही सुख है दुःख का तो नाम निशान ही नहीं रहेगा। सब भंडारे बाबा इतने भरपूर कर देंगे की चिंता किस चिड़िया का नाम है पता ही नहीं रहेगा। यहां जो अपने घर को, अपने भंडारे को परमात्मा बाप का भंडारा समझते हैं, वो मानो ब्रह्मा भोजन ही खाते हैं। उनके भंडारे और भंडारी सदा भरपूर रहते हैं।

उत्तर सं 5 "C" श्रीकृष्ण।

चित्र भी बाबा ने बनवाये हैं समझाने लिए। बाबा ने लॉकेट (बैज) भी बनवाये हैं। *एक तरफ त्रिमूर्ति दूसरे तरफ कृष्ण।* यह चित्र तो बहुत अच्छा है। इन पर तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। गवर्मेन्ट से इनाम मिलता है। बाबा ने तुम्हारे लिए मेहनत कर लॉकेट (बैज) बनाया है। फर्स्ट-क्लास चीज है। लॉकेट दिखा कर बोलो - आओ, हम सारे सृष्टि का राज़ इससे आपको बतावें। हम तुमको त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ विश्व का मालिक बना सकते हैं। इससे हम तुमको विश्व के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देते हैं।

उत्तर सं 6-"A" अशरीरी ।

आत्मा शरीर को चलाने वाली है। आत्मा में संस्कार रहते हैं। रात को अशरीरी बन जाती है।आत्मा शरीर को चलाने वाली है. रात को आत्मा शरीर में होती है, लेकिन थककर अशरीरी बन जाती है. शरीर का भान नहीं रहता, तो इसे नींद कहा जाता है. आत्मा अशरीरी आई है, अशरीरी बन जाना है. वहां परमधाम में शरीर संबंध नहीं. आत्माएं वहां से आती हैं, आकर शरीर में प्रवेश करती हैं।इसलिए रात को रेस्ट लेते समय *अशरीरी* बन जाती है।

उत्तर सं 7- "A" द्वापर ।

तुम्हारी यादगार अमरलोक में नहीं रहेगा।तुम्हारी यादगार. पीछे द्वापर में चाहिए। सतयुग में तुम्हारे यादगार नहीं थे। इस समय द्वापर से तुम अपना यादगार देखते हो।सतयुग में मन्दिर, तीर्थ आदि नहीं मानते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं अमरलोक की याद पीछे *द्वापर* में चाहिए। सतयुग या अमरलोक में धन.. अनगिनत, अथाह, बहुत जमीन, बड़े बड़े बगीचे, सोने के महल, हीरों की जड़त, हरेक का पुष्पक विमान (जो संकल्प से चलता,

कोई एक्सिडेंट नहीं), कोई कमी नहीं... हर स्थान-अवसर के वस्त्र अलग, बिल्कुल हल्के जेवर... रेत में भी सोना होगा।

उत्तर सं 8-"B" स्वर्ग का वर्सा

बाबा कहते हैं -वास्तव में तुम बहुत लोभी हो। परन्तु शुद्ध लोभ है कि बेहद के बाप से हम स्वर्ग का वर्सा लेंगे और एक बाप में ही पूरा मोह रखना है ।शुद्ध लालच का तात्पर्य असीमित पिता से स्वर्ग की विरासत और आध्यात्मिक प्राप्ति प्राप्त करने की तीव्र इच्छा है। "यह अच्छी रीति निश्चय हो जाना चाहिए। हम शिवबाबा से अनेक बार स्वर्ग का वर्सा ले चुके हैं, फिर से लेंगे। पुरुषार्थ से तुम जानते हो शिव-बाबा हमको स्वर्ग का वर्सा दे रहे हैं, तो क्यों नहीं उनसे वर्सा लेते हो ?" बाबा 21 जन्मों के लिए *स्वर्ग की राजाई का वर्सा* देते हैं।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (5) खण्ड -{10}

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1-मीठे बच्चे - सर्विस की नई- नई युक्तियाँ निकालते रहो। भारत को ..... बनाने में बाप का पूरा-पूरा मददगार बनो ?

A- परिस्तान

B- दैवी स्वराज्य

C- विश्व का मालिक

D- विश्व गुरू

प्रश्न सं 2- कोई कितना भी हिलाने की कोशिश करे, लेकिन..... रहना है और करना है - यह स्मृति रहे तो कभी गुस्सा नहीं आयेगा ?

A- सन्तुष्ट

B- हर्षित

C- बेफिकर बादशाह

D- निश्चिंत

प्रश्न सं 3-.....को लिफ्ट देने बाप आते हैं क्योंकि..... पर अत्याचार बहुत होते हैं ?

A-बाँधेलियों

B-माताओं

C- सीताओं

D- कन्याओं

प्रश्न सं 4-भारत पर ही कौन सा खेल बना है-

A-राम और रावण का।

B-सुख-दुःख, हार-जीत का

C-स्वर्ग-नर्क का

D-उपरोक्त सभी का

प्रश्न सं 5-ब्राह्मण कौन से दो प्रकार के होते हैं ?

A-सारसिद्ध और पुष्करणी।

B-ब्रह्मा मुखवंशावली

C-मुखवंशावली

D-B और C दोनों

प्रश्न सं 6-सर्व शास्त्रमई शिरोमणी गीता से कौन से शास्त्र निकले हैं ?

A-महाभारत,

B-शिवपुराण,

C-वेद, उपनिषद आदि

D-A और B दोनों

E-A,B और C

प्रश्न सं 7- मुस्कुराना किसकी निशानी है ?

A- सन्तुष्टता

B- संपूर्णता

C- पवित्रता

D- खुशी

प्रश्न सं 8- ईव किसको कहा जाये?

A- मम्मा को

B- ब्रह्मा को

C- शिव को

D- आदि देवी

पार्ट (5) खण्ड {10} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1-"B" दैवी स्वराज्य।

मीठे बच्चे सर्विस की नई नई युक्तियां निकालते रहो भारत को *दैवी स्वराज्य* बनाने में बाप का पूरा मदद करो। मन-बुद्धि से मुझ बाप को याद करो, साथ-साथ भारत को दैवी राजस्थान बनाने की सेवा करो "भारत को *दैवी स्वराज* बनाने की सेवा में

अपना सब कुछ सफल करना है। शिवबाबा पर पूरा-पूरा बलिहार जाना है।"

उत्तर सं 2- "A" सन्तुष्ट।

ब्राह्मण अर्थात् सदा सन्तुष्ट रहने और सर्व को सन्तुष्ट करने वाले इसलिए कुछ भी हो जाए, कोई कितना भी हिलाने की कोशिश करे लेकिन *सन्तुष्ट* रहना है और करना है - यह स्मृति रहे तो कभी गुस्सा नहीं आयेगा। यदि कोई बार-बार गलती करता है तो उसे परिवर्तन करने के लिए गुस्सा नहीं करो, बल्कि रहमदिल बनकर शुभ भावना, शुभ कामना की दृष्टि रखो तो वह सहज परिवर्तन हो जायेंगे।

उत्तर सं 3- "B" माताओं

माताओं को लिफ्ट देने बाप आते हैं क्योंकि माताओं पर अत्याचार बहुत होते हैं।माता गुरू बनी और पिता ने लिफ्ट की गिफ्ट दी।ब्रह्मा बाबा ने *माताओं* पर ज्ञान का कलष रखा। माताओं के मुख से निकला ज्ञान अमृत सबको पावन बनाता है.

माताओं को ही ट्रस्टी बनाया गया है और सब कुछ माताएं ही संभालें ऐसा निर्णय लिया गया।

उत्तर सं 4-"A" राम और रावण का।

भारत पर ही खेल है - *राम और रावण का।* भारत की रावण से हारे हार है फिर रावण पर जीत पहन राम के बनते हैं। राम कहा जाता है शिवबाबा को। राम का भी, तो शिव का भी नाम लेना पड़ता है समझाने के लिए। शिवबाबा बच्चों का मालिक अथवा नाथ है। वह तुमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं।आधाकल्प राम राज्य है तो आधाकल्प रावण का भी राज्य चलता है। भारत पर ही सारा खेल बना हुआ है।

उत्तर सं 5-"A" सारसिद्ध और पुष्करणी

ब्रह्मा का इतना नाम वा मन्दिर आदि नहीं है। सिर्फ अजमेर में ब्रह्मा का मन्दिर नामीग्रामी है, वहाँ ब्राह्मण भी रहते हैं। ब्राह्मण दो प्रकार के होते हैं - *1-सारसिद्ध और 2- पुष्करणी।* पुष्कर में रहने वालों को पुष्करणी कहा जाता है। परन्तु उन ब्राह्मणों को यह थोड़े ही पता है। कहेंगे हम ब्रह्मा मुखवंशावली हैं।

उत्तर सं 6-"E" A,B और C

बाबा कहते हैं यह गीत भी तुम्हारे शास्त्र हैं। सर्व शास्त्रमई शिरोमणी गीता है और *सभी शास्त्र महाभारत, रामायण, शिवपुराण, वेद, उपनिषद* आदि इसमें से ही निकले हैं।सभी शास्त्रों में सर्वोच्च स्थान गीता को ही दिया जाता है।

उत्तर सं 7. A सन्तुष्टता।

बापदादा सभी को टाइटल देते हैं – सन्तुष्ट आत्मायें, सन्तुष्ट मणियां। चाहे भाई हैं, चाहे बहन हैं, लेकिन आत्मा मणि है, इसलिए सभी सन्तुष्ट मणियां हैं, और सदा रहेंगी। देखना सन्तुष्टता को छोड़ना नहीं। कितना भी कोई आपके आगे कोशिश करे, आपकी सन्तुष्टता हिलाने के लिए आये लेकिन आप हिलना नहीं, सदा सन्तुष्ट। सदा मुखड़ा मुस्कुराता रहे। कभी कैसा, कभी कैसा नहीं। सदा मुस्कुराता हुआ चेहरा, अगर चेहरे में कभी थोड़ा फर्क आये तो अपने पूजने वाले चित्र को सामने रखो तो मेरा चित्र तो मुस्कुरा रहा है और मैं सोच रही हूँ। तो मुस्कुराना *सन्तुष्टता* की निशानी है। तो क्या बनेंगे? क्या करेंगे? सन्तुष्टमणि। चेहरे पर कभी भी और रेखायें नहीं हों, सिवाए मुस्कुराने के।

*उत्तर सं 8. B *ब्रह्मा को*

ईव किसको कहा जाये? मम्मा को ईव नहीं कहेंगे। मम्मा तो जगदम्बा है। *ईव इनको (ब्रह्मा) ही कहेंगे* क्योंकि इनके मुख द्वारा रचे।मनुष्य समझते हैं - एडम ब्रह्मा, ईव सरस्वती। वास्तव में यह रांग है। निराकार गॉड फादर है तो मदर भी जरूर होगी। परन्तु वो लोग ईव जगत अम्बा को कह देते हैं। वास्तव में यह बहुत मुख्य बात है। निराकार शिवबाबा इस ब्रह्मा मुख से कहते हैं - तुम हमारे बच्चे हो। यह ब्रह्मा माता बन जाती। ब्रह्मा प्रजापिता भी है तो माता भी है।एडम ही ईव है, यह नहीं समझते।* प्रजापिता ब्रह्मा वही फिर माता हो जाती है। *एडम और ईव अथवा आदम-बीबी कहते हैं। परन्तु अर्थ नहीं समझ सकते हैं। बच्चे समझ सकते हैं आदम-बीबी वास्तव में यह है। बीबी सो आदम है। इनको बीबी-आदम दोनों कह देते हैं।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (6) खण्ड -{11}

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- तुमने 84 जन्मों का पार्ट बजाया, तुम बैरिस्टर बने, राजा बने। अब तुम .....बनते हो।

A- विश्व के मालिक

B- ब्रह्माकुमार ब्रह्मकुमारी

C- ईश्वरीय संतान

D- ब्रह्मा मुखवंशावली

प्रश्न सं 2-कौन सी ड्रिल नम्बरवन ड्रिल है, इससे वायुमण्डल में सन्नाटा छा जाता है, बाप का डायरेक्शन है - इसी ड्रिल का

अभ्यास करो ?

A- निराकारी

B- अशरीरी

C- देही अभिमानी

D- फरिश्ता

प्रश्न सं-3- जब मुहब्बत के झूले में झूलते रहेंगे तो .....समाप्त हो जायेगी ?

A- देहभान

B- मेहनत

C- विध्न

D- माया

प्रश्न सं 4-ब्रह्मा वंशी उसको कहते हैं - जो ब्रह्मा के द्वारा अविनाशी ज्ञान लेकर ..... .बनते हैं?

A- देवता

B- ब्राह्मण

C- पवित्र

D- फरिश्ता

प्रश्न सं 5-अभी बाप को बहुत रहम आता है क्योंकि जानते हैं बच्चे माया अर्थात् 5 भूतों के वश हो पड़े हैं। परवश हैं, उनको अब ..... करता हूँ।

A- सुखी

B- मुक्त

C- लिबरेट

D- गाइड

प्रश्न सं 6-बाप जानते हैं यह माया ही सबका बड़े ते बड़ा दुश्मन है इसलिए मैं आया हूँ। परन्तु हूँ मैं.... इसलिए मुझे पहचानते नहीं।

A- निराकार

B- विचित्र

C- अदृश्य

D-बिन्दु स्वरूप

प्रश्न सं 7- कौन से साधन हैं, उन साधनों में यह नगाड़ा बजता रहेंगा - मेरा बाप आ गया?

A- साइंस के

B- साइलेन्स के

C- भक्ति के

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 8-सतयुग में जो देवी-देवता होंगे उन्हों के ही..... जन्म होंगे।

A-8 जन्म

B-21 जन्म

C-84 जन्म

D-उपरोक्त सभी।

पार्ट (6) खण्ड {11} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1. A विश्व का मालिक

जब स्टूडेन्ट बैरिस्टर बनने के लिए पढ़ते हैं तो बैरिस्टर से योग लगाते हैं और बैरिस्टर बन जाते हैं। आपका योग है परमपिता परमात्मा से, तो डबल सिरताज बनते हो। हथियारों से कोई विश्व का मालिक नहीं बन सकता। उनके पास विज्ञान है और आपके पास मौन है। इसलिए सिर्फ बाप और चक्र को याद करो और दूसरों को भी आप समान बनाओ, तो योगबल से *विश्व के मालिक* बन जाते हो।

उत्तर सं 2. B अशरीरी।

अशरीरी स्तिथि माना इस 5 तत्वों से बने शरीर से एकदम अलग हो जाना। अशरीरी अर्थात शरीर के भान से परे। शरीर अलग आत्मा अलग। देह, देह की दुनिया, देह के सम्बन्धों से न्यारे हो जाओ। शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करने के लिए शरीर में आना और

फिर कर्म करके देह में होते भी देह से न्यारे, अपने निराकार बिन्दु स्वरूप में स्थित हो जाना। *अशरीरी* हो जाना, यही अभ्यास बार बार करना है। स्मृति में रहे अब घर जाना है। बाप का डायरेक्शन है - इसी ड्रिल का अभ्यास करो।

उत्तर सं 3. B मेहनत ।

बापदादा को बच्चों से प्यार है ना। तो प्यार की निशानी है, प्यार वाले की मेहनत देख नहीं सकते। बापदादा तो उस समय यही सोचते कि बापदादा साकार में जाकर इनको कुछ बोले, लेकिन अब तो आकारी, निराकारी है। बिल्कुल सभी मेहनत से दूर मुहब्बत के झूले में झूलते रहो। *जब मुहब्बत के झूले में झूलते रहेंगे तो मेहनत समाप्त हो जायेगी।* मेहनत को खत्म करें, खत्म करें नहीं सोचो। सिर्फ मुहब्बत के झूले में बैठ जाओ, *मेहनत* आपे ही छूट जायेगी। छोड़ने की कोशिश नहीं करो, बैठने की, झूलने की कोशिश करो।

उत्तर सं 4. C पवित्र

ब्राह्मण जीवन का अर्थ ही है *पवित्र* आत्मा और ये पवित्रता ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है। ये फाउण्डेशन सदा अचल-अडोल रहना ही ब्राह्मण जीवन का सुख प्राप्त करना है।

उत्तर 5-"C" लिबरेट।

बाप को रहमदिल-मर्सीफुल और प्यार का सागर कहा जाता हैं? बाप को बहुत रहम आता है क्योंकि जानते हैं।बच्चे माया अर्थात् 5 भूतों के वश हो पड़े हैं। परवश हैं,उनको अब *लिबरेट* करता हूँ। बाप कहते हैं बच्चे अब मेरे कारण वा इस भारत अथवा सारे युनिवर्स के कारण तुम मेरी मत पर चलो। मुझे याद करो और रहम दिल भी बनो। सबको बाप का परिचय दो।

बाप बहुत रहमदिल है, प्यार का सागर है। बाप बहुत रहम करते हैं, उनको कहा जाता है मर्सीफुल।

उत्तर 6-"B" विचित्र।

। बाप जानते हैं यह माया ही सबका बड़े ते बड़ा दुश्मन है इसलिए मैं आया हूँ। परन्तु हूँ मैं *विचित्र*, इसलिए मुझे पहचानते नहीं। आगे समझते थे कि कृष्ण ने आकर राजयोग सिखाया, स्वर्ग का

मालिक बनाया था। परन्तु कब और कैसे बनाया - यह नहीं जानते। इस आश्चर्य को नहीं जानते। परन्तु मैं *विचित्र* ही अब आकर स्वयं ज्ञान देता हूं।

उत्तर 7- "A" साइंस के।

सबके दिल से यह आवाज़ निकले हमारा बाप आ गया है, मेरा बाप है। ब्रह्माकुमारियों का बाप नहीं, मेरा बाप है। जब सभी के दिलों से आवाज़ निकले कि मेरा बाप है, तब ही यह आवाज़ चारों ओर नगाड़े के माफिक गूँजेगा। जो भी *साइंस के* साधन हैं, उन साधनों में यह नगाड़ा बजता रहेगा - मेरा बाप आ गया। अभी जो भी कर रहे हो, बहुत अच्छा किया है और कर रहे हो। लेकिन अभी सबका इकठ्ठा नगाड़ा बजना है। जहाँ भी सुनेंगे, एक ही आवाज़ सुनेंगे। आने वाले आ गये - इसको कहा जाता है बाप की स्पष्ट प्रत्यक्षता। अभी नाम प्रसिद्ध हुआ है। पहला कदम नाम प्रत्यक्ष हुआ है कि ब्रह्माकुमारियां - ब्रह्माकुमार अच्छा काम कर रहे हैं।

उत्तर 8- "C" 84 जन्म।

सतयुग में जो देवी देवता होंगे उनके ही 84 जन्म होंगे।सतयुग में सनातन देवी-देवताओं के ही 84 जन्म होते हैं. कुछ लोगों का मानना है कि लक्ष्मी-नारायण 84 जन्म लेते हैं. बाप कहते हैं कि लक्ष्मी-नारायण 84 जन्म लेते हैं और फिर उनके ही बहुत जन्मों के अंत में मैं प्रवेश करके यह बनाता हूं।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (6) खण्ड -{12}

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- याद ही..... है जिससे आत्मा पावन बनती है। विकर्म विनाश हो जाते हैं।

A- करेंट

B- योग बल

C- योग अग्नि

D- बल

प्रश्न सं 2- बिना..... के माला में कैसे आयेंगे? माला कब बनती है? जब दाना दाने से मिलता है और एक ही धागे में पिरोये हुए होते हैं।

A- योग

B- सेवा

C- परिवार

D-धारणा

प्रश्न सं 3- कौनसे दो शब्दों की पढ़ाई है -इन्हीं दो शब्दों में चक्कर कहो, ड्रामा कहो, कल्प वृक्ष कहो सारी नॉलेज समाई हुई है?

A- आप और बाप

B- अल्फ और बे

C- मनमनाभव और मध्याजीव भव

D- इनमें से कोई नहीं

प्रश्न सं 4- सम्पूर्ण ब्रह्मा, सम्पूर्ण सरस्वती-दो नों कहाँ रहते है?

A- संगम पर

B- सूक्ष्मवतन में

C- स्वर्ग में

D- A और B दोनों सही

प्रश्न सं 5- कर्म करो लेकिन क्या बनके

काम करो ?

A- अव्यक्त फरिश्ता

B- निराकार

C- स्मृति स्वरुप

D -अशरीरी

प्रश्न सं 6-..... के आधार पर तुम विश्व में एक धर्म, एक राज्य की स्थापना करते

हो?

A- पवित्रता

B- साइलेन्स

C- पीस

D- शक्ति

प्रश्न सं 7-सतयुग में भी बच्चे..... पढ़ने स्कूल में जायेंगे ? टीचर होगा।

A- चित्रकला

B- शासन विद्या

C-राजविद्या

D- धनुर्विद्या

प्रश्न सं 8- ब्रह्मा बाप ने किस को शिक्षकन हीं बनाया, बेहद का वैराग्य आदि से अन्त तक रहा?

A- परिस्थितियों को

B- प्रकृति को

C -समय को

D- हद को

पार्ट (6) खण्ड {12} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर 1-"C" योग अग्नि।

याद ही योग अग्नि है जिससे आत्मा पावन बनती है. इसके लिए, आपको लगातार शिवबाबा को याद करते रहना है. योग, अग्नि के समान है, जिसमें तुम्हारे पाप जल जाते हैं, आत्मा सतोप्रधान बन जाती है. इसलिए एक बाप की याद में (योग में) रहो।आत्मा ही पतित बनती है फिर पावन बनती है. सतयुग में पावन थे फिर 84 जन्म ले पतित बने हैं।

उत्तर 2-"C" परिवार ।

बिना परिवार के माला में कैसे आयेंगे? माला कब बनती है? जब दाना दाने से मिलता है और एक ही धागे में पिरोये हुए होते हैं। अगर अलग¬अलग धागे में अलग¬ अलग दाना हो तो उसको माला नहीं कहेंगे। तो परिवार है माला। अगर परिवार को छोड़कर तीन निश्चय पक्के हैं तो भी विजय निश्चित नहीं है। चलो परिवार की खिटखिट से किनारा कर लो, बाप का सहारा हो, परिवार का किनारा हो, तो चलेगा? काम तो बाप से है या भाइयों से है? बाप से काम है, वर्सा बाप से मिलना है।

उत्तर 3. *A* आप और बाप

आप बच्चों के लिए रोज़ बाप शिक्षक बन आपके पास पढ़ाने आते हैं और कितना सहज पढ़ाते हैं। *दो शब्दों की पढ़ाई है - आप और बाप, इन्हीं दो शब्दों में चक्कर कहो, ड्रामा कहो, कल्प वृक्ष कहो सारी नॉलेज समाई हुई है।* और पढ़ाई में तो कितना दिमाग पर बोझ पड़ता है और बाप की पढ़ाई से दिमाग हल्का बन जाता है। हल्के की निशानी है ऊंचा उड़ना। हल्की चीज़ स्वत: ही ऊंची होती है। तो इस पढ़ाई से मन-बुद्धि उड़ती कला का अनुभव करती है।

उत्तर 4-. *B* सूक्ष्मवतन में।

त्रिमूर्ति ब्रह्मा कहने से ब्रह्मा की मत गाई हुई है। शिव को उड़ा दिया है। कहते हैं ब्रह्मा भी उतर आये। अब ब्रह्मा तो सूक्ष्मवतन से आकर मत देवे। अब तुमने यह समझा है, प्रजापिता ब्रह्मा को व्यक्त ब्रह्मा कहा जाता है। तुम अभी व्यक्त ब्राह्मण हो, फिर अव्यक्त सम्पूर्ण ब्राह्मण बनते हो। फिर तुम सूक्ष्मवतनवासी ब्राह्मण बन जायेंगे। *सम्पूर्ण ब्रह्मा, सम्पूर्ण सरस्वती – दोनों सूक्ष्मवतन में वहाँ रहते हैं।*

उत्तर 5-*D* अशरीरी।

कर्म करो लेकिन अव्यक्त फरिश्ता बनके काम करो। अशरीरीपन की स्थिति का जब चाहो तब अनुभव करो।* ऐसे मन और बुद्धि आपके कन्ट्रोल में हो। *आर्डर करो - अशरीरी बन जाओ। आर्डर किया और हुआ फरिश्ते बन जायें। जैसे मन को जहाँ जिस स्थिति में स्थित करने चाहो वहाँ सेकण्ड में स्थित हो जाओ।* ऐसे नहीं ज्यादा टाइम नहीं लगा, 5 सेकण्ड लग गये, 2 सेकण्ड लग गये। आर्डर में तो नहीं हुआ, कन्ट्रोल में तो नहीं रहा।

---

*उत्तर -6 *B* *साइलेन्स*

इसके आधार पर तुम विश्व में एक धर्म, एक राज्य की स्थापना करते हो - यह है साइलेन्स का घमन्ड"। तुम्हारा है साइलेन्स का घमन्ड, उन्हों का है साइंस का घमण्ड।

---

*उत्तर 7- *C* *राजविद्या*

बेहद का बाप कहते हैं मेरा कोई बाप नहीं। न टीचर है। सतयुग में भी बच्चे *राजविद्या* पढ़ने स्कूल में जायेंगे। टीचर होगा। हमारा कोई टीचर नहीं है। मैं तुमको राजयोग की शिक्षा देता हूँ। मैं कोई राजा-महाराजा नहीं बनूंगा। तुम बच्चे बनेंगे। पूज्य श्री लक्ष्मी, श्री नारायण थे। सतयुग में राज्य करते थे। यह निराकार बाप इस शरीर में विराजमान हो पढ़ाते हैं आत्माओं को।

---

*उत्तर 8 - *C* *समय*

ब्रह्मा बाप ने समय को शिक्षक नहीं बनाया, बेहद का वैराग्य आदि से अन्त तक रहा। *समय* के अनुसार तो सारे विश्व की आत्मायें

बदलेंगी लेकिन आप बच्चे समय का इन्तजार नहीं करो। समय को शिक्षक नहीं बनाओ।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (7) खण्ड -{13}

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- जिनके पास.....का विशेष गुण है,उनके पास सर्व गुण स्वतः आते जायेंगे।

A- धैर्यता

B- हर्षितमुखता

C- सन्तुष्टता

D- सहनशीलता

प्रश्न सं 2- तुम बच्चों को बाप समझाते हैं कि कोई आवाज नहीं करना है।सिर्फ ..... से याद करना है।

A- एकाग्र होकर

B- बुद्धि

C- दिल

D- मन

प्रश्न सं 3- ब्रह्मा बाप भी आप सबको क्या देने के लिए अव्यक्त बनें?

A- सहयोग देने

B- ज्ञान देने

C- पवित्रता देने

D- गुण- शक्तियां

प्रश्न सं 4-.....बनना है तो अपने सर्व रिश्ते एक प्रभू के साथ जोड़ लो।

A- फरिश्ता

B- स्नेही

C- सहजयोगी

D- अशरीरी

प्रश्न सं 5-आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा में जो बीत चुका वह भी.....

A- बिंदी

B -आश्चर्यजनक

C- फुलस्टॉप

D- कॉमा

प्रश्न सं 6-.ज्ञान मार्ग का एक ही कौन सा अक्षर ?

A- मेरा बाबा

B- ओ. के

C- शुक्रिया बाबा

D- मुरली

प्रश्न सं 7- किन्हों का विशेष स्लोगन है कि "हो ही जायेंगे"?

A- सक्सेसफुल का

B- अलबेलापन का

C- दिलशिकस्त का

D- पास विद् आनर का

प्रश्न सं 8-यह ब्राह्मण जन्म ही किस के लिए है?

A- याद और सेवा

B- सहयोग

C- ज्ञान और योग

D- धारणा और सेवा

पार्ट (7) खण्ड {13} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1 C सन्तुष्टता

जिनके पास *सन्तुष्टता* का विशेष गुण है उनके पास सर्व गुण स्वत: आते जायेंगे। एक सन्तुष्टता की विशेषता और विशेषताओं को भी सहज अपने समीप लाती है।

सन्तुष्टता सदा सर्व प्राप्ति सम्पन्न है क्योंकि जहाँ *सन्तुष्टता* है वहाँ अप्राप्त कोई वस्तु नहीं।

उत्तर सं 2 B बुद्धि

राम नाम सत है अर्थात् परमपिता परमात्मा जो सत है उसका ही नाम लेना चाहिए। उसको राम कह देते हैं। माला भी राम-राम कह सिमरते हैं। राम-राम की धुनि ऐसी लगाते हैं जैसे बाजा बजाते हैं। *तुम बच्चों को बाप समझाते हैं कि कोई आवाज नहीं करना है। सिर्फ बुद्धि से याद करना है।* तुम जानते हो - जीते जी ईश्वर की गोद में आने से यह दु:ख रूपी दुनिया खत्म हो जाती है।

उत्तर सं 3 A सहयोग

जब बापदादा आपको सदा साथ देने के लिए आये हैं, परमधाम छोड़कर क्यों आये हैं? सोते, जागते, कर्म करते, सेवा करते, साथ देने के लिए ही तो आये हैं। *ब्रह्मा बाप भी आप सबको सहयोग

देने के लिए अव्यक्त बनें।* व्यक्त रूप से अव्यक्त रूप में सहयोग देने की रफ्तार बहुत तीव्र है, इसलिए ब्रह्मा बाप ने भी अपना वतन चेंज कर दिया। तो शिव बाप और ब्रह्मा बाप दोनों हर समय आप सबको *सहयोग* देने के लिए सदा हाज़र हैं।

उत्तर सं 4 A फ़रिश्ता

सभी के श्रेष्ठ स्थिति की झलक इस सूरत को फरिश्ता बना देती है। साधारण सूरत नहीं, फरिश्ता सूरत। तो फरिश्ता सूरत भी कितनी प्यारी है! फरिश्ते सभी को बहुत प्यारे लगते हैं। क्योंकि फरिश्ता सर्व का होता है, एक-दो का नहीं। बेहद की दृष्टि, बेहद की वृत्ति, बेहद की स्थिति वाला है। फरिश्ता सर्व आत्माओं के प्रति परमात्म सन्देश वाहक है। फरिश्ता अर्थात् सदा उड़ती कला वाला। फरिश्ता अर्थात् सर्व का रिश्ता एक बाप से जुटाने वाला है *फरिश्ता बनना है तो अपने सर्व रिश्ते एक प्रभू के साथ जोड़ लो।*

उत्तर सं 5 C फुलस्टॉप

लोग रिचेस्ट बनने के लिए कितनी मेहनत करते हैं और आप कितना सहज मालामाल बनते जाते हो। जानते हो ना साधन! सिर्फ छोटी सी बिन्दी लगानी है बस। बिन्दी लगाई, कमाई हुई। *आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा फुलस्टाप लगाना, वह भी बिन्दी है।* तो बिन्दी आत्मा को याद किया, कमाई बढ़ गई। वैसे लौकिक में भी देखो, बिन्दी से ही संख्या बढ़ती है। एक के आगे बिन्दी लगाओ तो क्या हो जाता? 10, दो बिन्दी लगाओ, तीन बिन्दी लगाओ, चार बिन्दी लगाओ, बढ़ता जाता है। तो आपका साधन कितना सहज है! "मैं आत्मा हूँ" - यह स्मृति की बिन्दी लगाना अर्थात् खज़ाना जमा होना। फिर "बाप" बिन्दी लगाओ और खज़ाना जमा। कर्म में, सम्बन्ध-सम्पर्क में ड्रामा का फुलस्टाप लगाओ, बीती को फुलस्टाप लगाया और खज़ाना बढ़ जाता। तो बताओ सारे दिन में कितने बार बिन्दी लगाते हो? और बिन्दी लगाना कितना सहज है! मुश्किल है क्या? बिन्दी खिसक जाती है क्या?

उत्तर सं 6 B ओ.के

ज्ञान मार्ग का एक ही अक्षर है, कौन-सा अक्षर है? – *ओ. के. (OK)।* जैसे शिवबाबा गोल-गोल होता है ना वैसे ओ (O) भी

लिखते हैं। और के (K) अपनी किंगडम। तो ओ.के. माना बाप भी याद रहा और किंगडम भी याद रही। इसलिए *ओ. के*.... और ओ.के. लिखकर ऐसे नहीं रोज़ पोस्ट लिखो और पोस्ट का खर्चा बढ़ जाए।

उत्तर सं 7 B अलबेलापन।

अलबेला पन का विशेष स्लोगन है 'हो ही जायेगा'। आजकल अलबेलापन बहुत प्रकार का आ गया है। कोई के अन्दर किस प्रकार का अलबेलापन है, कोई के अन्दर किस प्रकार का अलबेलापन है। हो जायेगा, कर लेंगे.. और भी तो कर रहे हैं, हम भी कर लेंगे... यह तो होता ही है, चलता ही है... यह भाषा *अलबेलेपन* की संकल्प में तो है ही लेकिन बोल में भी है।

उत्तर सं 8 A याद और सेवा।

याद निरन्तर है, ऐसे ही सेवा भी निरन्तर है। अपने को निरन्तर सेवाधारी अनुभव करते हो? या 8-10 घण्टे के सेवाधारी हैं? *यह ब्राह्मण जन्म ही याद और सेवा के लिए है।* और कुछ करना है क्या? यही है ना! हर श्वांस, हर सेकण्ड याद और सेवा

साथ-साथ है या सेवा के घण्टे अलग हैं और याद के घण्टे अलग हैं?

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (7) खण्ड -{14}

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- अवस्था को स्थाई (एकरस) अचल बनाने का साधन क्या है?

A- निरन्तर योग

B- धारणा

C- ज्ञान और योग

D- योग और धारणा

प्रश्न सं 2-.....बनने वाले नॉलेज लेंगे, बीज भी बोयेंगे (सहयोगी बनेंगे), पवित्र भी रहेंगे लेकिन पढ़ाई पर पूरा ध्यान नहीं देंगे।

A- साधारण प्रजा

B- साहूकार प्रजा

C- रॉयल फैमिली

D- दास-दासी

प्रश्न सं 3- श्रीकृष्ण कुल में जाना है। श्रीकृष्ण है फुल पास, सम्पूर्ण.....?

A- चन्द्रमा

B- सूर्य

C- स्टार

D- बिन्दु

प्रश्न सं 4- द्वापर में भी आपके जड़ चित्र इतने.....बनते हैं जो कोई भी चित्रों के आगे जायेगा तो नमन करेगा।

A- गायन

B- ऊंच

C- महान

D- पूजनीय

प्रश्न सं 5- .....को याद करने से सारा ज्ञान आ जाता है ?

A- स्वदर्शन चक्र

B- बीज और झाड़

C- बाप और वर्से

D- सीढ़ी और चक्र

प्रश्न सं 6-और फल तो सतयुग में भी मिलेंगे और कलियुग में भी मिलेंगे लेकिन सेवा की भावना का प्रत्यक्षफल, प्रभू फल अगर अभी नहीं खाया तो सारे कल्प में नहीं खा सकते। यह फल ?

A- प्रभु फल है।

B- अविनाशी फल है।

C- सर्व सम्बन्धों के स्नेह के रस वाला फल है।

D- ईश्वरीय जादू का फल है।

प्रश्न सं 7- मीठे बच्चे - इस ज्ञान में ..... का गुण धारण करना बहुत जरूरी है, कभी भी अपना अभिमान नहीं आना चाहिए, माताओं का रिकार्ड रखो।

A- गम्भीरता

B- नम्रता

C- निरहंकारिता

D- निराभिमानी

प्रश्न सं 8-क्या बनना सबसे ऊंचे ते ऊंची तकदीर है ?

A- ब्राह्मण

B- स्वदर्शन चक्रधारी

C- शिव वंशी

D- ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी

पार्ट (7) खण्ड {14} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1- A निरन्तर योग।

अवस्था स्थाई तब बनेगी जब *निरन्तर योग* में रहेंगे। योग टूटता तब है जब किसी में ममत्व है इसलिए नष्टामोहा बनो। बुद्धि को पवित्र बनाओ। ज्ञान की धारणा जब भी पवित्र बुद्धि में ही होती है इसलिए बुद्धि रूपी बर्तन स्वच्छ हो, बाप से योग जुटा रहे।

उत्तर सं 2- B साहूकार प्रजा।

राजधानी का मालिक बनने के लिए पढ़ाई पर पूरा ध्यान चाहिए। पढ़ाई से ही पद की प्राप्ति होती है। *साहूकार प्रजा बनने वाले नॉलेज लेंगे, बीज भी बोयेंगे (सहयोगी बनेंगे), पवित्र भी रहेंगे लेकिन पढ़ाई पर पूरा ध्यान नहीं देंगे।* पढ़ाई पर ध्यान तब हो जब पहले पक्का निश्चय हो कि हमें स्वयं भगवान् पढ़ाने आते हैं।

अगर पूरा निश्चय नहीं तो यहाँ बैठे भी जैसे भुट्टू हैं। अगर निश्चय है तो रेग्युलर पढ़ना चाहिए। धारण करना चाहिए।

उत्तर सं 3- A चन्द्रमा।

यह श्रीकृष्ण मायाजीत बन जगतजीत अर्थात् जगत का प्रिन्स बना। यह श्रीकृष्ण भी अपने अन्तिम जन्म में युद्ध के मैदान में थे। वैसे अब यह भी युद्ध के मैदान में हैं। तुम भी युद्ध के मैदान में हो। सब भक्त हैं ना, माया के बंधन में फँसे हुए हैं। रखवाला है भोलानाथ शिव। रक्षा करने आये हैं तो उनकी राय पर चलना है। *श्रीकृष्ण के कुल में जाना है। श्रीकृष्ण है फुल पास, सम्पूर्ण चन्द्रमा।* जब चन्द्रवंशियों का समय आता है तो वह अपना राज्य ले लेते हैं। तो नापास क्यों होना चाहिए? फुल पास होना है तो पुरुषार्थ करो।

उत्तर सं 4- C महान।

वर्तमान समय तो ब्राह्मण आत्मायें महान हैं ही, और भविष्य में भी सर्व श्रेष्ठ महान हो। *द्वापर में भी आपके जड़ चित्र इतने महान बनते हैं जो कोई भी चित्रों के आगे जायेगा तो नमन

करेगा।* इतनी आपकी महानता है जो आज दिन तक अगर किसी भी आत्मा को बनावटी देवता बना देते, लक्ष्मी-नारायण बनायेंगे, श्रीराम बनायेंगे, तो जब तक वह आत्मा देवता का पार्ट बजाता है, तो उस आत्मा को जानते हुए भी कि यह साधारण मनुष्य है, लेकिन जब देवता रूप का पार्ट बजाते हैं तो उस साधारण आत्मा को भी नमन करेंगे। तो आपके रूप की महानता तो है लेकिन नामधारी आत्माओं को भी *महान* समझते हैं।

उत्तर सं 5- B *बीज और झाड़।* तो सेकेण्ड में तुमको *सारा याद आना चाहिए – बीज और झाड़।* बाबा भी कहते हैं – आदि, मध्य, अन्त का मेरे पास ज्ञान है इसलिए ही मुझे ज्ञान का सागर, नॉलेजफुल, जानी-जाननहार कहते हैं।

उत्तर सं 6- D *यह ईश्वरीय जादू का फल है।* सभी प्रत्यक्षफल के अनुभवी आत्मायें हो? प्रत्यक्षफल खाकर देखा है? *और फल तो सतयुग में भी मिलेंगे और अब कलियुग के भी बहुत फल खाये। लेकिन संगमयुग का प्रभु फल, प्रत्यक्ष फल अगर अब नहीं खाया तो सारे कल्प में नहीं खा सकते।* बापदादा

सभी बच्चों से पूछते हैं - प्रभु फल, अविनाशी फल, सर्व शक्तियां, सर्वगुण, सर्व सम्बन्ध के स्नेह के रस वाला फल खाया है? सभी ने खाया है या कोई रह गया है? *यह ईश्वरीय जादू का फल है।* जिस फल खाने से लोहे से पारस से भी ज्यादा हीरा बन जाते हो। इस फल से जो संकल्प करो वह प्राप्त कर सकते हो। अविनाशी फल, अविनाशी प्राप्ति। ऐसे प्रत्यक्ष फल खाने वाले सदा ही माया के रोग से तन्दरूस्त रहते हैं।

उत्तर सं 7- A *गम्भीरता* मीठे बच्चे - इस ज्ञान में *गम्भीरता* का गुण धारण करना बहुत जरूरी है, कभी भी अपना अभिमान नहीं आना चाहिए, माताओं का रिगार्ड रखो'' इसमें बड़ी गम्भीरता चाहिए और अभिमान नहीं आना चाहिए - मैं यह करता हूँ। जितना हो सके हर बात में माताओं को आगे रखना है। माता का रिगॉर्ड रखना है। सब चाबी माता के हाथ में होनी चाहिए। माता द्वारा समाचार आना चाहिए।

उत्तर सं 8- B - *स्वदर्शन चक्रधारी* स्वदर्शन चक्रधारी बनना - *यह है सबसे ऊंचे ते ऊंची तकदीर।* तुम ब्राह्मण अभी स्वदर्शन चक्रधारी बने हो। तुम अपनी भी तकदीर को जानते हो

तो सारे सृष्टि की भी तकदीर को जानते हो। बाबा आये हैं तुम बच्चों की हीरे समान तकदीर बनाने। स्मृति में रहे स्वयं भगवान हमारी तकदीर बनाने लिए पढ़ा रहे हैं तो तकदीर बनती रहेगी।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (8) खण्ड -{15}

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1-इनमें से कौन सा सही नहीं है?

A- आत्मा घड़ी-घड़ी एक शरीर छोड़

दूसरा लेती है।

B- इस समय जो तुम्हारा रूप है, दूसरे

जन्म में यह नहीं रहेगा।

C- आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है तो उनकी एक्टिविटी, ख्यालात आदि सब बदल जाते हैं।

D- एक्टेविटी भी बदलती रहती है - कभी कुत्ता, कभी बिल्ली की।

प्रश्न सं 2- अनेक आत्माओं का भविष्य बनाना है। 10-20 का नहीं, अनेक आत्माओं का सफल होना है। इसीलिए गायन है ?

A- बूँद-बूँद से तलाब।

B- बूँद-बूँद से घड़ा।

C- बूँद-बूँद से नदी।

D- बूँद-बूँद से समुद्र।

प्रश्न 3- बच्चे - अपने हार और जीत की हिस्ट्री को याद करो, यह सुख और दुःख का खेल है, इसमें.....सुख .....दुः ख हैं, इक्वल नहीं ?

A- 3/4, 1/4

B- 1/2, 1/2

C- 1/4, 3/4

D- 2/3, 1/3

प्रश्न 4- माताओं को विशेष कौन सा विघ्न आता है ?

A- मोह

B- बंधन

C- सम्बन्ध- सम्पर्क

D- माया

प्रश्न 5- इनमें से सही नहीं है- ?

A- बाप ने कहा है मुझे याद करो तो घर पहुँच जायेंगे।

B- स्वदर्शन चक्रधारी बनकर तुमको अन्त तक पुरूषार्थ करना है।

C- बाबा तो सिर्फ ज्ञान देने का पार्ट बजाते हैं। बाकी शरीर निर्वाह के लिए पुरूषार्थ बाप भी करेंगे।

D- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 6- लास्ट की सम्पूर्ण स्टेज क्या है ?

A- विदेही अवस्था

B- जीवनमुक्त अवस्था

C- न्यारी-प्यारी अवस्था

D- आत्माभिमानी अवस्था

प्रश्न सं 7- किसका सदा बैलेन्स रखते चलो?

A- ज्ञान और योग

B- सेवा और स्थिति

C- योग और सेवा

D-ज्ञान और धारणा

प्रश्न सं 8- लड़ाई है-

A- असुरों वा देवताओं की

B- पाण्डवों और कौरवों की

C- यवनों और कौरवों की

D- यादवों की आपस में

पार्ट (8) खण्ड {15} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1- D - *एक्टिविटी भी बदलती रहती है।

-ऐसे नहीं कभी कुत्ता-बिल्ली भी बनेंगे।* तुम्हारा तो जन्म बाई जन्म नाम, रूप, देश, काल बदलता जाता है। फीचर्स सदैव न्यारे मिलते हैं। यह कितनी गुह्य सूक्ष्म बातें हैं। *1)* तुम्हारी आत्मा घड़ी-घड़ी एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। *2)* इस समय जो तुम्हारा रूप है, दूसरे जन्म में यह नहीं रहेगा। एक न मिले दूसरे से। *3)* आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है तो उनकी एक्टिविटी, ख्यालात आदि सब बदल जाते हैं। आत्मा को कितना भिन्न-भिन्न पार्ट बजाना पड़ता है। भिन्न नाम, रूप, देश, काल एक्टिविटी से पार्ट बजाती है। *4)* *एक्टिविटी भी बदलती रहती है - कभी राजा की, कभी रंक की। ऐसे नहीं कभी कुत्ता-बिल्ली भी बनेंगे।* नहीं। अभी तुम जानते हो हम भविष्य में प्रिन्स-प्रिन्सेज बनने के लिए पुरुषार्थ करते हैं। मनुष्य से देवता बन रहे हैं।

उत्तर सं 2- A - *'बूँद-बूँद से तलाब'* ।

बाप गरीब-निवाज गाया हुआ है। अरब- खरबपति निवाज नहीं गाया हुआ है। बुद्धिवानों का बुद्धि क्या किसी अरब-खरबपति की बुद्धि को नहीं पलटा सकता? क्या बड़ी बात है! लेकिन ड्रामा का

बहुत अच्छा कल्याणकारी नियम बना हुआ है, परमात्म कार्य में फुरी-फुरी (बूंद-बूंद) तलाव होना है। *अनेक आत्माओं का भविष्य बनना है। 10-20 का नहीं, अनेक आत्माओं का सफल होना है। इसीलिए गायन है - 'बूँद-बूँद से तलाब'।* आप सभी जितना तन-मन- धन सफल करते रहते हो उतना ही सफलता के सितारे बन गये हो।

उत्तर सं 3- A - *3/4 1/4* "मीठे बच्चे - अपने हार और जीत की हिस्ट्री को याद करो, यह सुख और दु:ख का खेल है, *इसमें 3/4 सुख है, 1/4 दु:ख है, इक्वल नहीं"* बाप समझाते हैं यह जो ड्रामा बना हुआ है उसमें 3/4 सुख है, बाकी 1/4 कुछ न कुछ दु:ख है, इसलिए इसको सुख-दु:ख का खेल कहा जाता है। बाप जानते हैं मुझ बाप को सिवाए तुम बच्चों के कोई जान नहीं सकते।

उत्तर सं 4- A - *मोह* कोई भी आसक्ति चाहे देह की, चाहे तो देह के पदार्थों की कोई भी आसक्ति उत्पन्न हो तो उस समय यही याद रखो कि मैं शक्ति हूँ। शक्ति में फिर आसक्ति कहाँ? आसक्ति के कारण उस स्थिति में आ नहीं सकते हैं। तो

आसक्ति को खत्म कर दो। इसके लिए यही सोचो कि मैं शक्ति हूँ *माताओं को विशेष कौन सा विघ्न आता है? (मोह) मोह किस कारण आता है? मोह मेरा से होता है।* लेकिन आप सबका वायदा क्या है? शुरू-शुरू में आप सब-जब आये तो आपका वायदा क्या था? मैं तेरी तो सब कुछ तेरा।

उत्तर सं 5- C - *1)* आत्मा को ज्ञान मिला हुआ है। आत्मा को दर्शन हुआ है। आत्मा जानती है हम ऐसे-ऐसे चक्र लगाते हैं। अब फिर जाना है घर। *बाप ने कहा है मुझे याद करो तो घर पहुँच जायेंगे।* ऐसे भी नहीं है कि इस समय तुम उस अवस्था में बैठ जायेंगे।

2) यहाँ तो बाप कहते हैं और सब बातों को समेट एक को ही याद करो। श्रीमत मिलती है उस पर चलना है। *स्वदर्शन चक्रधारी बनकर तुमको अन्त तक पुरूषार्थ करना है।* पहले तो कुछ पता नहीं था, अब तो बाप बतलाते हैं। उनको याद करने से सब-कुछ आ जाता है। रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का सारा राज़ बुद्धि में आ जाता है।

3) तुम बच्चे पार्टधारी हो। *बाबा तो सिर्फ ज्ञान देने का पार्ट बजाते हैं। बाकी शरीर निर्वाह के लिए पुरूषार्थ तुम करेंगे।* बाबा

तो नहीं करेंगे ना। बाप तो आते ही हैं बच्चों को समझाने के लिए कि यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे-कैसे रिपीट होती है, चक्र कैसे फिरता है। यह समझाने के लिए ही आते हैं।

उत्तर सं 6- A विदेही अवस्था।

ये स्थिति राजयोग की सबसे अंतिम और उत्कृष्ट स्थिति है। इसे हम कर्मातीत अवस्था या स्थिति के रूप में भी जानते हैं। ये स्थिति तो हमें पुरुषार्थ की पराकाष्ठा में अन्त समय में ही मिलनी है।

उत्तर सं 7- B सेवा और स्थिति।

सेवा और स्थिति में सदा बैलेंस रखते चलो। स्थिति बनाने में थोड़ी मेहनत लगती है और सेवा तो सहज हो जाती है, इसलिए सेवा का पलड़ा थोड़ा स्थिति से ऊंचा हो जाता है। बैलेंस रखो और बापदादा की सर्व सेवा करने वाले संबंध संपर्क में आने वाले ब्राह्मण परिवार की ब्लेसिंग लेते चलो। दुआओं का खाता बहुत जमा करो।

उत्तर सं 8- C यवनों और कौरवों की।

बाबा कहते कौरवों और पाण्डवों की लड़ाई कभी होती नहीं क्योंकि पाण्डव होते हैं प्रीत बुद्धि और कौरव होते हैं विपरीत बुद्धि उनको लड़कर करना क्या है। लड़ाई होती है कौरवों और यादवों में, यादव या यवनों माना विज्ञान बुद्धि,विनाशकारी साधनों को बनाने वाले और कौरव माना परमात्म विपरीत बुद्धि या दुष्ट बुद्धि वाले, इसलिए उनकी लड़ाई होती है। पाण्डवों को लड़ने की जरूरत ही नहीं, पाण्डवों के पास लड़ने का कोई संकल्प ही नहीं है क्योंकि पाण्डव हैं आत्म स्मृति में, पाण्डवों को लड़ना है अपनी ही कमियों और कमजोरियों से, उनकी बुद्धि में है ये सब आत्माए हैं, एक बाप के बच्चे हैं, एक घर से आए हुए हैं और एक ही घर जाना है।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (8) खण्ड -{16}

सम्पूर्ण मुरलियों पर अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1-अमृतवेला विशेष..... की वेला है, इसका महत्व जान पूरा लाभ लो।

A- वरदान प्राप्ति

B- प्रभू पालना

C- उमंग उल्लास

D- झोली भरने

प्रश्न सं 2- क्या सदाकाल के लिए डबल लाइट फरिश्ता बनने नहीं देता?

A- आलस्य - अलबेलापन।

B- व्यर्थ वा निगेटिव - का बोझ।

C- माया रुपी विकार।

D- देहाभिमान।

प्रश्न सं 3- 5 हजार वर्ष पहले इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। फिर लक्ष्मी-नारायण दी फर्स्ट, सेकेण्ड, थर्ड चलते हैं।.. गद्दियाँ चलती हैं।

A- 21

B- 8

C- 108

D- 16108

प्रश्न सं 4-सर्वव्यापी का ज्ञान पहले नहीं था। कहते थे परमात्मा..... है।

A- अदृश्य

B- समझ ते परे

C- बेअन्त

D- नेति-नेति

प्रश्न सं 5-ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण-ब्राह्मणियाँ ही..... बनते हैं ?

A-त्रिकालदर्शी

B- त्रिनेत्री

C- त्रिलोकीनाथ

D-इनमें से कोई नहीं

प्रश्न सं 6- यही संगमयुग चढ़ती कला का युग इसमें ..... ?

A- हर सेकंड सफल करना चाहिए

B- निरन्तर आगे बढ़ते रहना चाहिए

C- बुद्धि से काम लेना चाहिए।

D- कोई गफलत नहीं करनी चाहिए

प्रश्न सं 7- ब्रह्मा समान हर संकल्प, बोल और कर्म में पवित्रता इसको क्या कहा जाता है ?

A- ब्रहाचारी और ब्रह्माचारी

B- शिवबाबा समान

C- ब्रह्मा बाप समान

D- ब्रह्मा बाप के नक्शे कदम

प्रश्न सं 8- कौरव पाण्डव की कोई युद्ध नहीं हुई है। यह तो..... युद्ध की है ?

A- पाण्डवों ने माया से

B- पाण्डवों ने यादवों से

C- पाण्डवो ने रावण से

D- पाण्डवों ने कंस से

पार्ट (8) खण्ड {16} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1. B प्रभू पालना

अमृतवेला डायमण्ड मॉर्निंग अर्थात वरदानी समय है। अमृतवेला परमात्म मिलन का वेला है, ये प्रभु पालना की वेला है। अमृतवेला वरदानी समय है सहज वरदान प्राप्त करने की वेला है।

जो गायन है मन इच्छित फल प्राप्त करना, यह इस समय अमृतवेले का ही गायन है।

उत्तर सं 2. B व्यर्थ वा निगेटिव - का बोझ।

फरिश्ता स्थिति का अनुभव करने के लिए किसी भी प्रकार के व्यर्थ और निगेटिव संकल्प, बोल वा कर्म से मुक्त बनो। *व्यर्थ वा निगेटिव - यही बोझ सदाकाल के लिए डीप साइलेन्स का अनुभव करने नहीं देता।* अब व्यर्थ बोझ से सदा हल्के बन डबल लाइट फरिश्ता बनो।

उत्तर सं 3. B 8

भारत में पवित्र गृहस्थ धर्म था, जिन्हों के चित्र हैं। लक्ष्मी-नारायण का राज्य था परन्तु वह कब स्थापन हुआ - यह कोई जानते नहीं। कल्प की आयु लाखों वर्ष कह देते हैं। तुम बच्चों को समझाया जाता है - 5 हजार वर्ष पहले इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। फिर लक्ष्मी-नारायण दी फर्स्ट, सेकेण्ड, थर्ड चलते हैं। *आठ गद्दियाँ चलती हैं।* फिर चन्द्रवंशी में 12 चलती हैं। डिनायस्टी होती है ना। मुगलों की डिनायस्टी, सिक्खों की डिनायस्टी....।

बच्चों को समझाया जाता है - 5000 वर्ष पहले भारत में एक ही लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी गवर्मेन्ट थी। वह बाप ही बनाते हैं।

उत्तर सं 4. C बेअन्त

मनुष्य तो क्या-क्या बातें सुनाकर माथा ही खराब कर देते हैं। बाप कहते हैं यह फिर भी होना ही है। *सर्वव्यापी का ज्ञान पहले नहीं था। कहते थे परमात्मा बेअन्त है।* बेअन्त कह फिर उनको सर्वव्यापी कहना कितनी बड़ी भूल है। शिवोहम् ततत्वम् कह देते हैं। कभी शिवोहम्, कभी फिर ब्रह्मोहम् भी कह देते। यह फिर राँग हो जाता है। ब्रह्म तो रहने का स्थान है। शिव बाबा ब्रह्म तत्व में रहते हैं इसलिए उनका नाम ब्रह्माण्ड है।

उत्तर सं 5. A त्रिकालदर्शी

बाप कहते हैं यह देह का भान छोड़ अपने को आत्मा निश्चय कर मुझ बाप को याद करो। तुम धक्के खाकर थक गये हो। *ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण-ब्राह्मणियाँ ही त्रिकालदर्शी बनते हैं।* बनाने वाला है बाप।

उत्तर सं 6. C बुद्धि से काम लेना चाहिए।

कहा जाता है कि यह संगमयुग चढ़ती कला का युग है और इसमें बुद्धि से काम लेना चाहिये। *इस युग को या समय को ड्रामानुसार वरदान मिला हुआ है - 'चढ़ती कला सर्व का भला'*

उत्तर सं 7. A* ब्रहाचारी और ब्रह्माचारी।

बापदादा ने सबसे पहला व्रत कौन-सा दिया? जब स्मृति का तिलक लगा तो पहला-पहला व्रत कौन सा लिया? याद है ना? सम्पूर्ण पवित्र भव। बाप ने कहा और बच्चों ने धारण किया। तो पवित्रता का व्रत सिर्फ ब्रह्मचर्य का व्रत नहीं लेकिन *ब्रह्मा समान हर संकल्प, बोल और कर्म में पवित्रता - इसको कहा जाता है ब्रह्मचारी और ब्रह्माचारी।* हर बोल में पवित्रता का वायब्रेशन समाया हुआ हो। हर संकल्प में पवित्रता का महत्त्व हो। हर कर्म में, कर्म और योग अर्थात् कर्मयोगी का अनुभव हो - इस्को कहा जाता है ब्रह्माचारी।

उत्तर सं 8. A* पाण्डवों ने माया से।

अभी हम कोई मायाप्रूफ नहीं हो गये हैं। अगर आत्मा कम्पलीट हो गयी तो शरीर भी कम्पलीट होना चाहिए। परन्तु नहीं, अभी अनकम्पलीट शरीर में बैठे हैं, तो इसका मतलब कि आत्मा कुछ अनकम्पलीट है। लेकिन घड़ी-घड़ी माया की अंगूरी नहीं खानी है, इससे चोट लगती है, फिर वह रजिस्टर अच्छा नहीं रहेगा। नाम तो खराब होगा ना। माया बहुत युक्तिबाज़ होके गिराती है। यही तो हमारी माया से लड़ाई है, *बाकी कौरव पाण्डव की कोई युद्ध नहीं हुई है। यह तो पाण्डवों ने माया से युद्ध की है।*

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (9) खण्ड -{17}

समग्र मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- जितना ..... बनेंगे, उतना माया जोर से वार करेगी। देखेगी लायक है वा नहीं?

A- पवित्र

B- महावीर

C- रुस्तम

D- धारणामूर्त

प्रश्न सं 2- बाबा ने राइट-हैण्ड बनाया है .....?

A- माताओं को

B- गोप को

C- शक्तियों को

D- ब्रह्मा बाप को

---

*प्रश्न सं 3- जहाँ भी रहते हो, सभी हिलने हैं, सब आधार टूटने हैं। तो ऐसे टाइम पर क्या चाहिये?

A- शक्तिशाली स्थिति

B- साधना का आधार

C- एक ही बाप का आधार

D- अन्तर्मुखता की स्थिति

प्रश्न सं 4- इनमें से कौन सा सही नहीं है ?

A- ऊंच ते ऊंच बीजरूप, फिर उनके नीचे लक्ष्मी और नारायण हैं।

B- रचयिता बाप को सर्व्यापी कहने से फिर यह सिद्ध नहीं होता कि हम सब बच्चे हैं।

C- ब्रह्मा-विष्णु -शंकर को सूक्ष्म देह मिली हुई है।

D- सभी सही है।

प्रश्न सं 5- परिस्थिति समझने से घबरा जाते लेकिन साइड सीन अर्थात् ?

A- खेल

B- रास्ते के नजारे

C- विघ्न

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 6- याद रखो हमारा बाप, टीचर और सतगुरू - तीनों ही .....है तो भी खुशी का पारा चढ़ेगा

A- एक

B- कम्बाइन्ड

C- शिव बाबा

D- बाप-दादा

प्रश्न सं 7- शक्तियों को कितनी भुजाएं दिखाते हैं ?

A- 4

B- 6

C- 8

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 8- गीता में कितनी बार मन्मनाभव लिखा हुआ है ?

A- 1

B- 2

C- 8

D-18

भाग (9) खण्ड {17} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1.*C* *रूस्तम*

तुम सर्वशक्तिमान के बच्चे हो तो माया भी कम नहीं है। आधा-कल्प रावण का राज्य है। इस समय माया भी जोर से

पछाड़ेगी, इसको तूफान कहा जाता है। हनूमान का मिसाल है ना। तुमको माया के कितने भी तूफान आयें परन्तु हिलना नहीं है। सदैव हर्षित रहना है।*जितना रुस्तम बनेंगे उतना माया जोर से वार करेगी। देखेगी - लायक है वा नहीं?*

---

*उत्तर सं 2. A *माताओं को*

ब्राह्मण कुल-भूषण हैं तो बहुत, परन्तु उनमें भी कोटो में कोई निकलते हैं जो अखबार में देख फौरन सर्विस करने लग पड़ते हैं। *बाबा ने राइट-हैण्ड बनाया है माताओं को।* गोप मुश्किल खड़े होते हैं, कोई बिरला यथार्थ रीति से श्रीमत पर अटेन्शन देते हैं। यह एक प्वाइंट है - भ्रष्टाचार और श्रेष्ठाचार की। भ्रष्टाचारी बुलाते हैं कि - हे भगवान्, आओ, आकर श्रेष्ठाचारी बनाओ। सभी भ्रष्टाचारी जरूर हैं। कहा जाता है यथा राजा-रानी तथा प्रजा।

उत्तर सं 3. C *एक ही बाप का आधार*

आप लोगों के आगे तो ऐसा समय आया नहीं है लेकिन आना है। *जहाँ भी रहते हो, सभी हिलने हैं, सब आधार टूटने हैं। तो ऐसे टाइम पर क्या चाहिये? एक ही बाप का आधार।* आप

लोग तो बहुत-बहुत-बहुत लक्की हो, जो आने का समय आपका सहज साधनों का है। सहज साधनों के साथ-साथ आपका ब्राह्मण जन्म है। लेकिन साधन और साधना - साधनों को देखते साधना को नहीं भूल जाना। क्योंकि आखिर में साधना ही काम में आनी है।

उत्तर सं 4. A *ऊंच ते ऊंच बीजरूप, फिर उनके नीचे लक्ष्मी और नारायण हैं।*

ऊंच ते ऊंच बीजरूप के नीचे सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा-विष्णु-शंकर हैं। रचयिता सबके ऊपर होता है। वह रचयिता बाप है और बाकी रचना है।

उत्तर सं 5. B *रास्ते के नजारे*

सदा अपने मास्टर सर्वशक्तिमान स्वरूप की स्मृति में रहो तो हर परिस्थिति ऐसे अनुभव होगी जैसे एक साइडसीन है। *परिस्थिति समझने से घबरा जाते लेकिन साइड सीन अर्थात् रास्ते के नजारे समझेंगे* तो सहज पार कर लेंगे क्योंकि नजारों

को देख खुशी होती है, घबराते नहीं, विघ्न-विघ्न नहीं है लेकिन आगे बढ़ने का साधन है।

---

*उत्तर सं 6. *B* कम्बाइन्ड*

"मीठे बच्चे - *याद रखो हमारा बाप, टीचर और सतगुरू - तीनों ही कम्बाइन्ड है* तो भी खुशी का पारा चढ़ेगा, उनकी श्रीमत पर चलते रहेंगे।अर्थात शिव बाबा बाप भी बनते हैं, टीचर भी बनते हैं और सतगुरु भी बनते हैं।

---

*उत्तर सं 7. *D* *उपरोक्त सभी*

शक्तियों के चित्रों में भिन्न-भिन्न रूप से और फिर भुजाओं के रूप में नम्बरवार शक्तियों का यादगार है। उन चित्रों में कहाँ कितनी भुजायें, कहाँ कितनी दिखाते हैं। कोई अष्ट शक्तियों को धारण करने वाली बनती हैं, कोई उससे अधिक, कोई उससे कम। *कहाँ 4 भुजाएं, कहाँ 8 भुजाएं, कहाँ 16 भी दिखाते हैं, नम्बरवार।*

उत्तर सं 8.B *2*

मनुष्य को जो आदत पड़ती है वह वृद्धि को पाती है। बुद्धि में रहना चाहिये हमारे 84 जन्म पूरे हुए। अब नाटक पूरा हुआ। अभी हम जाते हैं अपने घर इसलिये बाप कहते हैं - मुझे याद करो। *गीता में भी दो बार मन्मनाभव लिखा हुआ है।* कुछ-कुछ बातें आटे में लून हैं। यह शब्द आपने कई बार साकार और अव्यक्त दोनों ही मुरली में सुना या पढ़ा होगा। बाबा कहते हैं: " कर्म करते हुए मुझे याद करो... मनमनाभव अर्थात मन मेरे में लगाओ।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (9) खण्ड -{18}

समग्र मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- नाटक पूरा हुआ, अब निरन्तर बाप को याद करने की कोशिश करो। अगर और कुछ याद पड़ता रहेगा तो....

A- विकर्म हो जाएगा

B- बोझ चढ़ जाएगा

C- हिसाब बन जाएगा

D- सजायें खानी पड़ेगी

प्रश्न सं 2- इनमें से कौन सा सही है?

A- ब्रह्मा और विष्णु को महादेव नहीं कहेंगे।

B- वहाँ (स्वर्ग) तो होगा ही शीतल।

C- आत्मा बुद्धिहीन औंधी बनी है।

D- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 3- किस विधि से नये स्टूडेन्ट्स पर ज्ञान का रंग लग सकता है ?

A- पहले सात रोज़ भट्टी में बिठाओ

B- पहले खुद पर ज्ञान का रंग चढ़ाओ

C- शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा सूक्ष्म सेवा करो

D- उपरोक्त सभी सही

प्रश्न सं 4- ..... दोनों के बैलेन्स से प्रत्यक्षता होगी।

A- सेवा और तपस्या

B- ज्ञान और योग

C- स्व सेवा और विश्व सेवा

D- स्वपरिवर्तन और विश्वपरिवर्तन

प्रश्न सं 5- प्रसन्नचित्त के सम्बन्ध में इनमे से कौनसा कथन सही नहीं है ?

A- प्रसन्नचित्त औरों का भी क्वेश्चन मार्क खत्म कर देता है।

B- प्रश्नचित्त वायब्रेशन के बजाय प्रसन्नचित्त का वायब्रेशन जल्दी फैलता

C- जिसका प्रसन्नचित्त होता है उसके मन-बुद्धि के व्यर्थ की गति फास्ट नहीं होगी।

D- कैसा भी आग समान जला हुआ गरम दिमाग का हो लेकिन प्रसन्नचित्त के वायब्रेशन की छाया में शीतल हो जायेगा

E- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 6- विकारों का आपस में बहुत गहरा सम्बन्ध है, अगर बाहर के रूप में इमर्ज रीति से क्रोध है लेकिन आन्तरिक चेक करो तो क्रोध के साथ ..... होता ही है। ये सब आपस में साथी हैं ?

A- लोभ, अहंकार

B- काम, अहंकार

C- मोह, अहंकार

D- लोभ- मोह

प्रश्न सं 7- इनमे से कौन सा सही नही है ?

A- सूक्ष्मवतन में तो प्रजापिता होता नहीं है।

B- प्रलय अक्षर रांग हैं।

C- कभी-कभी कोई को आत्मा का साक्षात्कार होता है।

D- एक जिन्न का मिसाल है। उसने कहा कि काम दो नहीं तो खा जाऊंगा।

E- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 8- कोई भी विकर्म करके छिपाना नहीं, छिपकर सभा में बैठने वाले .....,..... इसलिए सावधान, विकार की कड़ी भूल कभी भी नहीं हो ?

A- चकनाचूर हो जाते हैं।

B- का सत्यानाश हो जाता है।

C- पर बहुत दण्ड पड़ता है।

D- बहुत दुःखी होते हैं।

भाग (9) खण्ड {18} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1 D *सजायें खानी पड़ेगी*

बाप बच्चों को कहते हैं - अब यह पुराना चोला छोड़ना है। नाटक पूरा हुआ, अब निरन्तर बाप को याद करने की कोशिश

करो। अगर और कुछ याद पड़ता रहेगा तो फिर *सजायें खानी पड़ेगी।* जितना हो सके औरों की याद निकाल दो। यात्रा पर जाते हैं तो बुद्धि में वही याद रहती है। बस, हम श्रीनाथ द्वारे जाते हैं। तुम्हारी है सच्ची रूहानी यात्रा।

उत्तर सं 2 D. *उपरोक्त सभी सही है*

A. गाते हैं - हर-हर अर्थात् दु:ख को हरो। भगवान् के लिये ही गाते हैं। परन्तु भगवान् का पता न होने के कारण ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के लिये कह देते हैं। देव-देव महादेव। शिव को भूल शंकर के लिये कह देते - हर-हर महादेव .....। *ब्रह्मा और विष्णु को महादेव नहीं कहेंगे।* वह तो दोनों स्थूल पार्ट में आते हैं। शंकर सूक्ष्मवतन में ही रहते है।

B. इस समय तो तुम ईश्वर के सम्मुख हो। फिर तो डिग्री डिग्रेड हो जायेगी। जाकर दैवी सन्तान बनेंगे। अभी यह शीतल गोद अच्छी है। *वहाँ (स्वर्ग) तो होगा ही शीतल।* परन्तु यहाँ तो तत्ते (गर्म) को भी शीतल बनाया जाता है तो वह अच्छा रहता है।

C. आत्मा और शरीर दोनों ही पुराने हैं। *आत्मा बुद्धिहीन अंधी बनी है।* मनुष्य को थोड़ेही अंधा कहा जाता है। आंखे तो हैं

ना। परन्तु बुद्धि अंधी है। आत्मा में जो बुद्धि है याद करने की वह बिल्कुल भूल गई है।इसलिए उपरोक्त सभी सही है।

उत्तर सं 3. A *पहले सात रोज़ भट्ठी में बिठाओ*

उन्हें पहले-पहले सात रोज़ की भट्ठी में बिठाओ। कायदा है - जब कोई भी आता है तो उनसे फार्म भराओ। पहले सात रोज़ भट्ठी में पड़े तब पूरा रंग लगे। तुम भ्रमरियां ज्ञान की भूँ-भूँ कर आप समान बनाती हो। तुम जानती हो - अभी देवता धर्म की सैपलिंग लग रही है। जो इस घराने की आत्मायें होंगी वह महारोगी से निरोगी बनने के पुरुषार्थ में लग जायेंगी।

उत्तर सं 4. A *सेवा और तपस्या*

अभी प्रत्यक्षता बाप की करने का फाउण्डेशन कहाँ से होगा? दिल्ली से या महाराष्ट्र से? कर्नाटक से, लंदन से.... कहाँ से होगा? दिल्ली से होगा? करो निरन्तर सेवा और तपस्या। *सेवा और तपस्या* दोनों के बैलेन्स से प्रत्यक्षता होगी। जैसे सेवा का डायलॉग बनाया ना, ऐसे दिल्ली में तपस्या का वर्णन करने का डायलॉग बनाओ तब कहेंगे दिल्ली, दिल्ली है। दिल्ली

बाप की दिल तो है लेकिन बाप के दिल पसन्द कार्य करके भी दिखायेंगे।

उत्तर सं 5. B *प्रश्नचित्त वायब्रेशन के बजाय प्रसन्नचित्त का वायब्रेशन जल्दी फैलता*

वैसे एक का क्वेश्चन था, अभी दो का हो गया, दो से चार का हो जायेगा। *तो प्रसन्नचित्त वायब्रेशन के बजाय प्रश्नचित्त का वायब्रेशन जल्दी फैलता है।* हाँ! ऐसा है... साथ दे दिया। आश्चर्य की मात्रा आ गई ना - हाँ! तो फुलस्टॉप तो नहीं हुआ ना। चाहे अपने प्रति भी - ये मेरे से होना नहीं चाहिये, ये मेरे को मिलना चाहिये, ये दूसरे को नहीं होना चाहिये, तो ये चाहिये-चाहिये प्रश्नचित्त बना देती है, प्रसन्नचित्त नहीं।

उत्तर सं 6. A *लोभ, अहंकार*

पहले भी सुनाया था कि कभी कोई, कभी कोई गुण की प्राप्ति को सामने रखते हुए सन्तुष्ट रहो क्योंकि एक गुण भी अपनाया तो जैसे *विकारों का आपस में बहुत गहरा सम्बन्ध है, अगर बाहर के रूप में इमर्ज रीति से क्रोध है लेकिन आन्तरिक

चेक करो तो क्रोध के साथ लोभ, अहंकार होता ही है।* ये सब आपस में साथी हैं। कोई इमर्ज रूप में होते हैं, कोई मर्ज रूप में होते हैं। तो गुण भी जो हैं उन्हों का भी आपस में सम्बन्ध है। इमर्ज एक गुण को रखो लेकिन दूसरे गुण भी उनके साथ ही मर्ज रूप में होते हैं। तो रोज़ कोई न कोई प्राप्ति स्वरूप का अनुभव अवश्य करो। अगर प्राप्ति इमर्ज रूप में होगी तो प्राप्ति के आगे अप्राप्ति खत्म हो जायेगी और सदा सन्तुष्ट रहेंगे।

उत्तर सं 7. E *उपरोक्त सभी सही है।*

सूक्ष्मवतन में शिव परमात्मा के नीचे सूक्ष्म ब्रह्मा, विष्णु,महेश को दिखाया गया है। आत्मा का साक्षात्कार दिव्य बुद्धि से किसी किसी को होता है। बाबा ने जिन्न के सम्बन्ध में लोक प्रचलित धारणा को इस महावाक्य में व्यक्त किया। इसलिए उपरोक्त सभी सही हैं

उत्तर सं 8. C *पर बहुत दण्ड पड़ता है।*

“मीठे बच्चे - कोई भी विकर्म करके छिपाना नहीं, छिपकर सभा में बैठने वाले *पर बहुत दण्ड पड़ता है* इसलिए सावधान,

विकार की कड़ी भूल कभी भी नहीं हो"

यहाँ भगवान खुद कहते हैं - अगर तुम विकारों में गिर पतित बने और सुनाया नहीं तो सौ गुणा दण्ड पड़ता रहेगा। बाप का बच्चा बनकर फिर अगर छिपकर नर्क का द्वार बने और फिर बाबा को समाचार नहीं दिया तो एक-दम मर पड़ेंगे फिर कितना भी पुरुषार्थ करे, विजय पा नहीं सकेंगे। बाबा इतला दे रहे हैं। बहुत बच्चे हैं जो छिपाते हैं। विकार में जाना बड़ा पाप है। छिपाया और मरा। ऐसे तो बच्चा न बनें तो अच्छा है।

पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी टेक्स्ट प्रारूप में WHATSAPP पर प्राप्त करने के लिए 9458867727 पर सम्पर्क करें।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (10) खण्ड -{19}

समग्र मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- आत्मा भी चैतन्य है। सब संस्कार आत्मा में हैं। बाप में भी संस्कार हैं- ..... के कर्तव्य करने के ?

A- स्थापना, पालना, विनाश

B- स्थापना, विनाश, पालना

C- विनाश, स्थापना, पालना

D- पालना, स्थापना,विनाश

प्रश्न सं 2- तुम्हारी है प्रीत बुद्धि कोई की विपरीत बुद्धि हो जाती है तो जैसे कौरव बन जाते हैं। भल यहाँ आते हैं। परन्तु पद कम हो जाता है। जो कुछ जमा हुआ वो ना हो जाता है।फिर ....

A- जाकर प्रजा बन जाएंगे

B- प्रजा में जाकर कम पद पायेंगे

C- रॉयल फैमिली के भी दास दासी बनेंगे

D- साहूकारों के नौकर चाकर बनेंगे

प्रश्न सं 3- इनमें से व्यर्थ संकल्प के सम्बन्ध में कौन सा सही नहीं है?

A- व्यर्थ संकल्प बुद्धि को भी कमजोर करते हैं और स्थिति को भी कमजोर करते हैं।

B- जिनका व्यर्थ चलता है उनकी बुद्धि कमजोर होती है,कनफ्यूज्ड होती है।निर्णय ठीक नहीं होगा।

C- व्यर्थ संकल्प ही नही विकल्प की गति भी बहुत फास्ट होती है।

D- परेशानी या खुशी गायब होना, मन उदास रहना, अपने जीवन से मज़ा नहीं आना ये व्यर्थ संकल्प की निशानियाँ हैं।

E- उपरोक्त सभी सही हैं।

प्रश्न सं 4- भूत ही दुःख देते हैं ..... का भूत आदि-मध्य-अन्त दुःख देता है। इसमें बहुत मेहनत करनी है। मासी का घर नहीं है ?

A- काम

B- क्रोध

C- मोह

D- आलस्य

प्रश्न सं 5- लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में अगर शिव की जीवन कहानी सुनायेंगे तो क्या होगा?

A- किसको जंचेगी नहीं

B- ख्याल में नहीं आयेगा।

C- अच्छी रीति बुद्धि में नहीं पड़ेगा।

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 6- सम्पूर्ण अर्थात्.....?

A- अविनाशी

B- फरिश्ता

C- पूरा परवाना

D- कर्मातीत

प्रश्न सं 7- जिसको रचता और रचना का ज्ञान बुद्धि में है उनको क्या कहा जाता है ?

A- स्वदर्शन चक्रधारी।

B- नॉलेजफुल

C- ज्ञान का सागर

D- मास्टर सर्वशक्तिमान

प्रश्न सं 8- .....रूपी कवच को पहनकर रखो तो माया रूपी दुश्मन वार नहीं कर सकता ?

A- याद

B- बिंदु

C- योग

D- ज्ञान

प्रश्न सं 9- रावण ने तुम्हारा क्या छीन लिया ?

A- खुशी

B- सुख

C- राज्य- भाग्य

D- स्वर्ग

प्रश्न सं 10- एक शब्द को अपने आप अण्डरलाइन करो, वह एक शब्द है।

A- एकप्रिय

B- एकांतवासी

C- एकव्रता

D- एकानॉमी

प्रश्न सं 11- राइट हैण्डस् का यादगार है?

A- पाण्डव भवन

B- विराट रूप का चित्र

C- शक्ति स्तम्भ

D- शान्तिवन

प्रश्न सं 12- शक्तियां सदा किस नाम से प्रसिद्ध हैं?

A- विश्व कल्याणकारी

B- सदा विजयी

C- उद्धारमूर्त

D- सफलतामूर्त

प्रश्न 13- सम्पूर्ण अधिकार वा सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न आत्मा जो सदा अमृतवेले से रात तक प्राप्तियों के नशे वा अनुभव में रहती है, उनकी निशानी क्या होगी?

A- प्रसन्नता

B- सन्तुष्टता

C- निर्मानता

D- हर्षितमुखता

प्रश्न 14- इनमें से कौन सा सही नहीं है?

A- गीता में भी है कि पेट से मूसल निकले।

B- यादव, कौरव, पाण्डव - तीन सेनायें।

C- यादव-कौरव लड़कर खत्म हुए।

D- कौरव-पाण्डवों की कोई लड़ाई नहीं होती।

E- उपरोक्त सभी सही हैं।

प्रश्न 15- युग फिरते रहते हैं। कलियुग के बाद होता है संगमयुग, कलियुग और सतयुग के बीच का यह है....

A- कल्याणकारी धर्माऊ युग

B- पुरुषोत्तम युग

C- उत्तम ते उत्तम, मर्यादा पुरुषोत्तम बनने का युग

D- उपरोक्त सभी सही

प्रश्न सं 16- अच्छी तरह पढ़ेंगे, लिखेंगे तो नवाब बनेंगे ..... तो होंगे खराब ?

A- खेलेंगे कूदेंगे।

B- नाचेंगे गायेंगें।

C- मारेंगे पीटेंगे।

D- रूलेंगें पिलेंगे।

भाग (10) खण्ड {19} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1. B *स्थापना, विनाश, पालना*

परमपिता और परमात्मा शिव का विशेष कार्य स्थापना, विनाश और पालना है. यह कार्य सिर्फ़ तीन मूर्तियों के ज़रिए होता है. इससे सृष्टि का चक्र चलता है, जो कार्य और कोई नहीं कर सकता,एक बाप के तीन विशेष कार्य-कर्ता हैं जिनके ज़रिए विश्व का कार्य कराया जाता है. ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना, और शंकर द्वारा विनाश होता है. वास्तव में उपरोक्त तीनों कार्य का कर्ता त्रिमूर्ति शिवबाबा हैं। जैसे सब संस्कार आत्मा में हैं। बाप में भी संस्कार हैं - *स्थापना, विनाश, पालना*

उत्तर सं 2. B *प्रजा में जाकर कम पद पायेंगे*

बाप आकर बच्चों को समझाते हैं। तुम्हारी है प्रीत बुद्धि। कोई की विपरीत बुद्धि हो जाती है तो जैसे कौरव बन जाते हैं। भल यहाँ आते हैं परन्तु पद कम हो जाता है। जो कुछ जमा हुआ वो ना हो जाता है। फिर *प्रजा में जाकर कम पद पायेंगे।* इस समय देखो - पढ़ाई से क्या-क्या बन सकते हैं। बाबा कहते हैं कि - बच्चे, देवता बनना है तो इस खराब चीज़ को (विष को) छोड़ना है। एक बाप ही सच्चा सतगुरू है जो मुक्ति-जीवनमुक्ति में ले जाने वाला है।

उत्तर सं 3. C *व्यर्थ संकल्प ही नही विकल्प की गति भी बहुत फास्ट होती है।*

आप सब जानते हो कि *व्यर्थ संकल्प बुद्धि को भी कमजोर करते हैं और स्थिति को भी कमजोर करते हैं।* *जिनका व्यर्थ चलता है उनकी बुद्धि कमजोर होती है, कन्फ्युज्ड होती है। निर्णय ठीक नहीं होगा।* सदा मूंझा हुआ होगा। क्या करूँ, क्या न करूँ, स्पष्ट निर्णय नहीं होगा। और व्यर्थ संकल्प की गति बहुत फास्ट होती है। व्यर्थ संकल्प का तो सबको अनुभव होगा। विकल्प नहीं, व्यर्थ का अनुभव सभी को है। तो फास्ट गति होने के कारण उसको कन्ट्रोल नहीं कर पाते हैं। कन्ट्रोल खत्म हो जाता है। *परेशानी या खुशी गायब होना या मन उदास रहना, अपने जीवन से मज़ा नहीं आना - ये व्यर्थ संकल्प की निशानियाँ हैं।* मुरली के आधार से A, B, D तीनों सही हैं इसलिए C गलत है।

उत्तर सं 4 A - *काम*

कोई तो सुधरते ही नहीं, कोई न कोई भूत है। लोभ का भूत, क्रोध का भूत है ना। सतयुग में कोई भूत नहीं। सतयुग में होते हैं देवतायें, जो बहुत सुखी होते हैं। *भूत ही दु:ख देते हैं, काम का भूत आदि-मध्य-अन्त दु:ख देता है। इसमें बहुत मेहनत करनी है। मासी का घर नहीं है।* बाप कहते रहते हैं भाई-बहन समझो तो क्रिमिनल दृष्टि न जाये। हर बात में हिम्मत चाहिए।

उत्तर सं 5 D - *उपरोक्त सभी*

बाप तो है ही हेविन का रचयिता तो जरूर हेविन का ही मालिक बनायेंगे। हम उनकी बायोग्राफी बताते हैं। कैसे स्वर्ग की स्थापना करते हैं, कैसे राजयोग सिखाते हैं, आकर सीखो। जैसे बाप समझाते हैं, वैसे बच्चे नहीं समझा सकते हैं क्या? इसमें बहुत अच्छा समझाने वाला चाहिए। शिव के मन्दिर में बहुत अच्छा मनाते होंगे, वहाँ जाकर समझाना चाहिए। *लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में अगर शिव की जीवन कहानी सुनायेंगे तो किसको जंचेगी नहीं। ख्याल में नहीं आयेगा। फिर उन्हों को अच्छी रीति बुद्धि में बिठाना पड़े।*

उत्तर सं 6 C - *पूरा परवाना*

इन आँखों से और कुछ देखना नहीं है। आखें भी दे दी ना। पूरे परवाने हो ना। परवाने को शमा बिगर और कुछ देखने में आता है क्या? आपकी आखें और क्यों देखती? जब और कुछ देखते हैं तो धोखा देती है। अपने को धोखा न दो। इसके लिए परवानों को सिवाए शमा के और किसी को नहीं देखना है। *सम्पूर्ण अर्थात् पूरा परवाना हैं।* यह है छाप। रिजल्ट तो अच्छी है लेकिन उसको अविनाशी रखना है।

उत्तर सं 7 A - *स्वदर्शन चक्रधारी*

"पहले-पहले हम ब्राह्मण हैं, हम ब्राहमणों को रचने वाला ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा है। रचता और रचना के ज्ञान से ही तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो। यह नॉलेज बुद्धि में कायम रखनी है। सुबह को उठकर स्वदर्शन चक्रधारी बन बैठ जाना चाहिए। हमने अपने 84 जन्मों के चक्र को जान लिया है। हम सब आत्माओं का रचयिता बाप एक है। कहते भी हैं हम सब भाई-भाई हैं। हमारा बाप वह निराकार परमपिता परमात्मा है, परमधाम में रहने वाला है। हम भी वहाँ रहते थे, वह हमारा बाबा है। *रचता और रचना के ज्ञान से ही तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो।*

उत्तर सं 8 C - *योग रूपी कवच पहनकर रखो तो माया रूपी दुश्मन का वार नही होगा।*

❇ योग रूपी कवच आत्मा में बल भर कर आत्मा को शक्तिशाली बना देता हैं जिसके सामने माया शक्तिहीन हो जाती है और आत्मा माया रूपी दुश्मन के वार से बच जाती है ।

❇ योग रूपी कवच धारण करने से आत्मा उपराम अवस्था को प्राप्त कर अचल और अडोल स्थिति के अनुभव द्वारा सहज ही माया रूपी दुश्मन के वार से बच जाती है ।

❇ योग का बल वृति और वायुमण्डल को पॉवरफुल बना देते हैं जिसके आगे माया का फ़ोर्स स्वत: ही समाप्त हो जाता है। और माया रूपी दुश्मन डर कर भाग जाता है।

❇ योग का कवच आत्मा को गुणों और शक्तियों का अनुभवी बना देता है जिससे सर्व शक्तियां समय प्रमाण हाजिर हो कर माया रूपी दुश्मन को हरा देती हैं ।

❇ योग के बल से आत्मा सिद्धि स्वरूप बन जाती है और सिद्धि स्वरूप आत्मा माया रूपी दुश्मन के आने से पहले ही उसे पहचान कर उसके वार से स्वयं को बचा लेती है ।

उत्तर सं 9 - *राज्य-भाग्य*

बेहद का बाप आया हुआ है। कल्प-कल्प आते हैं, *माया रावण ने जो हमारा राज्य-भाग्य छीन लिया है,* वह हम आत्माओं को फिर से अपना राज्य-भाग्य बाबा आकर देते हैं। ऐसे नहीं कि कोई लड़ाई से छीना गया है। नहीं। रावण राज्य में हमारी मत भ्रष्टाचारी हो जाती है। श्रेष्ठाचारी से हम भ्रष्टाचारी बन जाते हैं। दुनिया देखो कितनी बढ़ गई है, हमारा भारत देश कितना छोटा था। स्वर्ग में कितने सुखी रहेंगे। हीरे जवाहरात के महल होंगे। वहाँ रावण होता नहीं। तुम बच्चों की बुद्धि में खुशी होनी चाहिए,

अतीन्द्रिय सुख रहना चाहिए। बाप कहते हैं - देही-अभिमानी बनो।

उत्तर सं 10 C - *एकव्रता*

बाप के पास अखुट वरदान हैं जो जितना लेने चाहे खुला भण्डार है। ऐसे खुले भण्डार से कई बच्चे सम्पन्न बनते हैं और कोई यथा-शक्ति सम्पन्न बनते हैं। सबसे ज्यादा झोली भरकर देने में भोलानाथ वरदाता रूप ही है, सिर्फ उसको राज़ी करने की विधि को जान लो तो सर्व सिद्धियां प्राप्त हो जायेंगी। वरदाता को एक शब्द सबसे प्रिय लगता है – एकव्रता। संकल्प, स्वप्न में भी दूजा-व्रता न हो। वृत्ति में रहे मेरा तो एक दूसरा न कोई, जिसने इस राज़ को जाना, उसकी झोली वरदानों से भरपूर रहती है। *इसलिए एक शब्द को अपने आप अण्डरलाइन करो, वह एक शब्द है- एकव्रता*

उत्तर सं 11 B - *विराट रूप का चित्र*

बाप के आप सभी राइट हैण्ड हो। कोई को कुछ भी देना होता है तो हैण्ड द्वारा देते हैं ना! तो आप सभी बाप के राइट हैण्ड हो ना! पाण्डव राइट हैण्ड हो? *आप राइट हैण्डस का यादगार है। पता है कौन-सा यादगार है? विराट रूप का चित्र देखा है, तो

उसमें कितने हाथ दिखाते हैं? तो आप राइट हैण्ड का चित्र है ना!* कुमारियां, उसमें आप लोगों का चित्र है ना? तो अभी बाप राइट हैण्डस द्वारा आत्माओं को सुख-शान्ति की अंचली तो दिलायेगा ना! बिचारों को अंचली भी नहीं देंगे तो कितने तड़फेंगे! अभी सभी हद की बातों से ऊँचे हो जाओ। हद की बातों में, हद के संस्कारों में समय नहीं गंवाओ।

उत्तर सं 12 A - *विश्व कल्याणकारी*

शक्तियां हो ना, साधारण तो नहीं हो या घर में जाती हो तो साधारण मातायें बन जाती हो? नहीं, सदा यह याद रहे कि हम शक्तियां है। *हद के नहीं हैं, बेहद के विश्व कल्याणकारी हैं।* शक्तियां अर्थात् असुरों के ऊपर विजय प्राप्त करने वाली। शक्तियों को कहते ही हैं असुर संहारनी अर्थात् आसुरी संस्कार को संहार करने वाली। तो सभी शक्तियां ऐसी बहादुर हो?

उत्तर सं 13 B - *सन्तुष्टता*

बाप ने नम्बर नहीं बनाये हैं लेकिन अपने-अपने धारणा की यथाशक्ति ने नम्बरवार बना दिया है। *सम्पूर्ण अधिकार वा सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न आत्मा जो सदा अमृतवेले से रात तक प्राप्तियों के नशे वा अनुभव में रहती है, उनकी निशानी क्या

होगी? प्राप्तियों की निशानी है सन्तुष्टता।* वो सदा सन्तुष्टमणि बन दूसरों को भी सन्तुष्टता की झलक का वायब्रेशन फैलाते रहते हैं। उनका चेहरा सदा प्रसन्नचित्त दिखाई देगा। प्रसन्नचित्त अर्थात् सर्व प्रश्नचित्त से न्यारा

उत्तर सं 14 E - *उपरोक्त सभी सही हैं*

अभी दु:ख के तो पहाड़ गिरने वाले हैं। किनकी दबी रहेगी धूल में....। वह भी समझते हैं कि हम जो बाम्ब्स बनाए आपस में आंख दिखाते हैं तो आखिर ख़ात्मा तो जरूर होना है। परन्तु पता नहीं कौन प्रेरक है जो ऐसी चीज़ बनवा रहे हैं। *गीता में भी है कि पेट से मूसल निकले।* यह है सारी बुद्धि की बातें। बाम्ब्स निकालते हैं अपने नेशन का विनाश करने। *यादव, कौरव, पाण्डव – तीन सेनायें हैं ना। यादव-कौरव लड़कर खत्म हुए। बाकी कौरव-पाण्डवों की कोई लड़ाई नहीं होती।* तुम्हारी कोई से युद्ध नहीं। तुम हो योगबल वाले राजऋषि। संन्यासी हैं हठयोग ऋषि।

उत्तर सं 15 D - *उपरोक्त सभी सही हैं*

ड्रामा अनुसार बाप को आना ही है। बनी बनाई बन रही.... इसमें कोई फ़र्क नहीं हो सकता। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी चक्र

लगाती रहती है। *4 युग फिरते रहते हैं। कलियुग के बाद होता है संगमयुग, कलियुग और सतयुग के बीच का यह है कल्याणकारी धर्माऊ युग।* यह है *पुरुषोत्तम युग अर्थात् उत्तम ते उत्तम, मर्यादा पुरुषोत्तम बनने का युग।* इस युग जैसा उत्तम युग कोई होता नहीं। सतयुग-त्रेता का संगमयुग कोई ऊंच नहीं है। उसमें तो दो कला सुख की कम होती हैं। इस संगमयुग की ही महिमा है। तुम जानते हो बाप तो है ऊंच ते ऊंच। ऐसे नहीं कि सर्वव्यापी है।

उत्तर सं 16-D रूलेंगें पिलेंगे

अच्छी तरह पढ़ेंगे, लिखेंगे तो नवाब बनेंगे, रूलेंगे पिलेंगे तो होंगे खराब। यह तो लौकिक पढ़ाई में भी होता है।जितना जो अच्छा कर्म करते हैं वह ऊंच पद पाते हैं। ऊंच कर्मों से ही ऊंच बनते हैं। अच्छे कर्म नहीं करते हैं तो झाड़ू लगाते हैं। भरी ढोते हैं। कर्मों का फल तो कहेंगे ना। कर्मों की थ्योरी चलती है। श्रीमत से अच्छे कर्म होते हैं। कहाँ बादशाह, कहाँ दास - दासियां।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (10) खण्ड -{20}

समग्र मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- मीठे बच्चे - बाप का कर्तव्य है, कांटों के जंगल को खलास कर फूलों का बगीचा बनाना, इससे ही नम्बरवन ..... हो जाती है।

A- दुनिया की स्थापना

B- दैवी दुनिया की स्थापना

C- अवस्था

D- फैमिली प्लैनिंग

प्रश्न सं 2- मुक्ति जीवन-मुक्ति के सम्बन्ध में इनमें से कौनसा सही नहीं है?

A- बाप को हर एक ब्राह्मण बच्चे को बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त बनाना ही है।

B- मुक्तिधाम में मुक्ति व सतयुग में जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकेंगे।

C- मुक्ति-जीवनमुक्ति के वर्से का अनुभव अभी संगम पर ही करना है।

D- उपरोक्त सभी सही हैं।

प्रश्न सं 3- यह बहुत बड़ा इम्तहान है, जो बाप ही पढाते हैं। इसमें ..... आदि की दरकार नहीं। बाप को याद करना है, ?

A- शास्त्र

B- गीता

C- किताब

B- दुनियावी ज्ञान

प्रश्न सं 4- बाप को सब बच्चे नम्बरवार याद करते हैं लेकिन बाप किन बच्चों को याद करते हैं ?

A- जो बच्चे बहुत मीठे हैं।

B- जिन्हें सर्विस के बिना और कुछ सूझता ही नहीं।

C- जो अति प्रेम से बाप को याद करते, खुशी में प्रेम के आंसू बहाते।

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 5- त्रिमूर्तिवंशी त्रिमूर्ति बच्चों की तीन प्रकार की लाइट्स का साक्षात्कार होता है। उन तीनों में कौन सी लाइट्स

एक नहीं हैं ?

A- नयनों की ज्योति

B- मस्तक की लाइट

C- आत्मा की लाइट

D- माथे पर लाइट का क्राउन

प्रश्न सं 6 दिलवाड़ा मन्दिर में इनमें से कौन हैं ?

A- शिव

B- आदि देव

C- हम बच्चे

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 7- अल्लाह की फीमेल कौन ?

A- बीबी

B- ब्रह्मा

C- शिव

D- मम्मा

प्रश्न सं 8- त्रिलोकीनाथ कौन है ?

A- ब्राह्मण

B- लक्ष्मी नारायण

C- शिव बाबा

D- A और C

E- A,B और C

प्रश्न सं 9- जब तुम बाप की गोद में आते हो तो यह दुनिया ही ख़त्म हो जाती है, तुम्हारा अगला जन्म नई दुनिया में होता है, इसलिये कहावत है ?

A- राम गयो रावण गयो

B- आप मुये मर गई दुनिया

C- सारी दुनिया कब्रदाखिल है

D- मिरूआ मौत मलूका शिकार

प्रश्न सं 10- अलौकिक का अर्थ है ?

A- सम्पूर्ण पवित्र

B- ब्राह्मण स्वरूप

C- इस लोक जैसे नहीं

D- सम्पूर्ण फरिश्ता

प्रश्न सं 11- सारे सृष्टि का ज्ञान किसमें है ?

A- झाड में

B- परमपिता परमात्मा में

C- सृष्टि चक्र में

D- तीनों में

प्रश्न सं 12- निर्णय करने, परखने और..... की शक्ति को धारण करना ही होलीहंस बनना है ?

A- उड़ने

B- सामना करने

C- ग्रहण करने

D- समाने

प्रश्न सं 13- बाप कहते हैं..... ऐसे कोई साधू-संन्यासी कह न सके ?

A- मुझे याद करो।

B- मेरे सिकीलधे बच्चे।

C- श्रीमत पर चलना है।

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 14- इनमें से सही नहीं है ?

A- श्रीमत पर चलेंगे तो श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मनुष्य अर्थात् देवता बनेंगें।

B- देवता सिर्फ सूर्यवंशी को कहा जाता है।

C- बाप आया है। यह ढिंठोरा पिटवाना तुम्हारा फ़र्ज है।

D- महाभारी लड़ाई भी सामने खड़ी है।

E- उपरोक्त सभी सही है।

प्रश्न सं 15- बाप का भी फ़र्ज है-

A- तुम्हारी सेवा करे

B- तुम्हें राजधानी में ले जाएं

C- स्वर्ग का वर्सा दे

D- 16 कला सम्पूर्ण बनाना

*प्रश्न सं 16 *- तुम सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त, मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन को जानकर बन गये हो।

A- त्रिलोकीनाथ

B- त्रिकालदर्शी

C- त्रिनेत्री

D- मास्टर भगवान

भाग (10) खण्ड {20} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1- D फैमिली प्लैनिंग

मीठे बच्चे - बाप का कर्तव्य है, कांटों के जंगल को खलास कर फूलों का बगीचा बनाना, इससे ही नम्बरवन फैमली प्लैनिंग हो जाती है'। गीता है फैमली प्लैनिंग का फर्स्टक्लास शास्त्र क्योंकि गीता द्वारा ही बाप ने अनेक अधर्म विनाश कर एक धर्म स्थापन किया। जो फैमली प्लैनिंग के मिनिस्टर होते हैं, उन्हों को समझाना चाहिए। बोलो, फैमली प्लैनिंग की ड्युटी तो गीता के कथन अनुसार एक बाप की ही है।

उत्तर सं 2- B मुक्तिधाम में मुक्ति व सतयुग में जीवन-मुक्ति का अनुभव कर सकेंगे।

हर एक ब्राह्मण बच्चे को बाप को बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त बनाना ही है। चाहे किसी भी विधि से, लेकिन बनाना ज़रूर है। बापदादा हर एक बच्चे को जीवनमुक्त स्थिति में सदा देखने चाहते हैं। आप सबका यह चैलेन्ज है कि बाप से मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा आकर लो। लेकिन आपको तो मुक्ति वा जीवनमुक्ति का वर्सा मिल गया है ना? *सतयुग में या मुक्तिधाम में मुक्ति व जीवनमुक्ति का अनुभव नहीं कर सकेंगे।* मुक्ति-जीवनमुक्ति के वर्से का अनुभव अभी संगम पर ही करना है।

उत्तर सं 3- C किताब

यह ज्ञान की पढ़ाई का बहुत बड़ा इम्तहान है, जो बाप ही पढ़ाते हैं। इसमें *किताब* आदि की दरकार नहीं। कितनी तुम मेहनत करते हो, विश्वास नहीं करते कि भगवान् आकर इन्हों को पढ़ाते हैं। जरूर कोई में तो आयेंगे ना। तुम्हारे लिए तो सहज है, नम्बरवार तो हैं ही। स्कूल में भी नम्बरवार होते हैं। पढ़ाई में भी नम्बरवार होते हैं। इस पढ़ाई से बड़ी राजाई स्थापन हो रही है। पुरूषार्थ ऐसा करना है जो हम राजा बनते हैं।

उत्तर सं 4- D उपरोक्त सभी

सवेरे-सवेरे उठकर याद में बैठ प्यार से बाबा से मीठी-मीठी बातें करो। बाप को सब बच्चे नम्बरवार याद करते हैं लेकिन बाप उन बच्चों को याद करते हैं, जो बच्चे बहुत मीठे हैं, जिन्हें सर्विस के बिना और कुछ सूझता ही नहीं। जो अति प्रेम से बाप को याद करते, खुशी में प्रेम के आंसू बहाते। ऐसे बच्चों को बाप भी याद करते हैं। बाप की नज़र फूलों तरफ जाती है, कहेंगे फलानी आत्मा बड़ी अच्छी है, यह आत्मा जहाँ सर्विस देखती, भागती रहती है, अनेकों का कल्याण करती है। तो बाप उसे याद करते हैं।

उत्तर सं 5- C- आत्मा की लाइट

त्रिमूर्ति बाप के बच्चे स्वयं भी त्रिमूर्ति हैं। तीन प्रकार की लाइट्स साक्षात्कार की आती है? बच्चों की तीन प्रकार की लाइट्स का साक्षात्कार होता है। एक तो लाइट का साक्षात्कार होता है नयनों से। कहते हैं ना कि नयनों की ज्योति। नयन ऐसे दिखाई पड़ेंगे जैसे नयनों में दो बड़े बल्ब जल रहे हैं। दूसरी होती है मस्तक की लाइट। तीसरी होती हैं माथे पर लाइट का क्राउन। अभी यह कोशिश करना है जो तीनों ही लाइट्स का साक्षात्कार हो। कोई भी सामने आये तो उनको यह नयन बल्ब दिखाई पड़े।

ज्योति ही ज्योति दिखाई दें। जैसे अंधियारे में सच्चे हीरे चमकते हैं ना। इस रीति से मस्तक के लाइट्स का साक्षात्कार होगा। और माथे पर जो लाइट का क्राउन है वह तो समझते हो। ऐसे त्रिमूर्ति लाइट्स का साक्षात्कार एक-एक से होना है।

उत्तर सं 6- D - उपरोक्त सभी

यह कोई जानते नहीं कि देलवाड़ा मन्दिर हूबहू इन्हों का यादगार है। ऐसा मन्दिर कहीं नहींहै, जगदम्बा है,*शिवबाबा* भी है। शक्तियों का चबूतरा भी बना हुआ है। यह जो जैनी लोग हैं उनका यह देलवाड़ा मंदिर है। यह जो चैतन्य होकर गये हैं उनका ही जड़ यादगार है। *आदि देव* आदि देवी भी बैठे हैं। ऊपर में स्वर्ग है। अब अगर जो उन्हों के भगत हैं उन्हों को ज्ञान मिले तो अच्छी तरह समझ सकते हैं कि बरोबर नीचे राजयोग की शिक्षा ले रहे हैं। ऊपर में भी प्रवृत्ति मार्ग, नीचे भी प्रवृत्तिमार्ग। कुवारी कन्या, अधर कन्या का चित्र भी है। अधरकुमार और कुमार भी हैं। तो *मंदिर में आदि देव ब्रह्मा भी बैठा है और बच्चे भी बैठे हैं। *

उत्तर सं 7- B - *ब्रह्मा*

अल्लाह ने सृष्टि रची तो रचना के लिये उन्हें फीमेल चाहिये, गॉड फादर कहते हो तो जरूर मदर भी चाहिये ना। तुम बच्चे इस गुह्य

राज़ को अच्छी तरह से जानते हो। अल्लाह की फीमेल है यह ब्रह्मा। यह है तुम्हारी बड़ी माँ। इस बात को मनुष्य समझ नहीं सकते।

*उत्तर सं 8- D- *A और C*

आधाकल्प रामराज्य, आधाकल्प रावण राज्य, जास्ती हो नहीं सकता। तुम बच्चों की बुद्धि में अब सारी त्रिलोकी आ गई है। तुम त्रिलोकी के मालिक द्वारा नॉलेज ले रहे हो। इस समय तुम *त्रिलोकी के नाथ हो क्योंकि तुम तीनों लोकों के ज्ञान को जानते हो। बाबा त्रिलोकी का नाथ, तीनों लोकों को जानने वाला है। तुमको नॉलेज देते हैं तो हम भी मास्टर त्रिलोकीनाथ ठहरे।* जो ज्ञान बाबा में है वह अब तुम्हारे में भी है, नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। फिर सतयुग में तुम विश्व के मालिक बनेंगें। लक्ष्मी-नारायण को त्रिलोकी का ज्ञान नहीं रहता है। उन्हें सृष्टि चक्र का ज्ञान नहीं रहता है।

उत्तर सं 9. B- आप मुये मर गई दुनिया

दुनिया नहीं मरती है, दुनिया नहीं विनाश होती है। उसी दुनिया में उनको जन्म लेना पड़ता है। अभी इस समय में तुम जब बाप की गोद में आते हो, जीते जी मरते हो, बल्कि जब मरेंगे भी

तो यह दुनिया भी मर जाएगी। आप मुए पीछे मर गई यह दुनिया। अब जब जीते जी मरते हो तो फिर जानते हो, यह सारी दुनिया खत्म होनी है। हम आते हैं बाप की गोद में, फिर हम आएँगे नई दुनिया में देवताओं के गोद में- यह तुम जानते हो। और कोई मनुष्य नहीं जानते हैं।

उत्तर सं 10. C- इस लोक जैसे नहीं

सबसे न्यारा एक ही है, और कोई हो नहीं सकता। तो आप भी कौन हैं? न्यारे और प्यारे। आपका यह न्यारा जीवन सारे विश्व को प्रिय लगता हे। इसलिए ब्राह्मण जीवन को अलौकिक जीवन कहते हैं। *अलौकिक का अर्थ क्या है? लोक जैसे नहीं।* अलौकिक अर्थात् लोक जैसा जीवन नहीं है।

उत्तर सं 11. B- परमपिता परमात्मा में

ज्ञान है ही ज्ञान सागर के पास। ज्ञान का सागर नॉलेजफुल - यह उस बाप की ही महिमा है। ज्ञान का सागर परमपिता परमात्मा को ही कहा जाता है, कृष्ण को नहीं कहेंगे। वह तो सतयुग का प्रिन्स है। उनमें यह आदि -मध्य-अन्त का ज्ञान नहीं है। सतयुगी देवताओं में भी यह ज्ञान नहीं है। परमपिता परमात्मा के सिवाए कोई राजयोग सिखला न सके।ईश्वर ही सृष्टि को रचते

हैं इसलिए उनको रचना का ज्ञान है। वह जन्म- मरण में नहीं आते, इसलिए वह सृष्टि चक्र 5000 वर्ष के ड्रामा का ज्ञान शिव बाबा ही जानते है।गाते भी हैं परमपिता परमात्मा सृष्टि का बीजरूप है।

उत्तर सं 12. C- ग्रहण करने

निर्णय करने, परखने और *ग्रहण करने* की शक्ति को धारण करना ही होलीहंस बनना है। होलीहंस अर्थात् कंकर और रत्न को अच्छी तरह परखने वाले और फिर धारण करने वाले। पहले हर आत्मा के भाव को परखने वाले और फिर धारण करने वाले। कभी भी बुद्धि में किसी भी आत्मा के प्रति अशुभ वा साधारण भाव धारण करने वाले न हो। सदा शुभ भाव और शुभ भावना धारण करना।

उत्तर सं 13. B- मेरे सिकीलधे बच्चे।

बाप कहते हैं - *“मेरे सिकीलधे बच्चे।"* ऐसे कोई साधू-संन्यासी कह न सके। तुम जानते हो बरोबर हम शिवबाबा के सिकीलधे बच्चे हैं, 5 हजार वर्ष के बाद फिर आकर मिले हैं स्वर्ग का वर्सा लेने लिये। जानते हो हम ही स्वर्ग के मालिक थे फिर

हम ही बनते हैं। स्वर्ग में जाना जरूर है। फिर पुरुषार्थ अनुसार ऊंच पद पाना है।

उत्तर 14. E- उपरोक्त सभी सही है।

श्रीमत पर चलेंगे तो श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मनुष्य अर्थात् देवता बनेंगें। देवता सिर्फ सूर्यवंशी को कहा जाता है। बाप आया है। यह ढिंठोरा पिटवाना तुम्हारा फ़र्ज है। महाभारी लड़ाई भी सामने खड़ी है। सभी ऑप्शन बिलकुल सही हैं।

उत्तर 15. A- तुम्हारी सेवा करे

बाप को तो सगे बच्चों को मदद करनी ही है। तुम भी तन-मन-धन से सेवा करते हो। *बाप का भी फ़र्ज है तुम्हारी सेवा करे।* बाप कहते हैं - यह सब कुछ तुम बच्चों का है। भक्ति मार्ग में तुम भगवान् को देते आये हो। परन्तु ईश्वर कोई भूखा थोड़ेही है। यह तुम इनश्योर करते हो। ईश्वर को देने से ईश्वर फिर दूसरे जन्म में तुमको देंगे। यह इनश्योर करना हुआ ना। दूसरे जन्म में इसका फल मिलता है। ईश्वर है दाता। अभी तुम अपने को इनश्योर करते हो - 21 जन्म लिए। वह इनश्योर करते हैं एक जन्म के लिए।

उत्तर 16. D- मास्टर भगवान

तुम अभी जानते हो यह सारा संसार अभी स्वप्नवत् है अर्थात् सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक सब कुछ बीत चुका है तुम्हें अभी सेकेण्ड में इस स्वप्नवत् संसार की स्मृति आ गई। *तुम सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त, मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन को जानकर मास्टर भगवान* बन गये हो।